जूलै २००० रू. 10/-

चन्दामामा

Khao
Parrys
Jeeto
Prizes!
Send 20 wrappers,
win a Parrys Stuntman!
Send in a total of 20 wrappers of
Madras Café, Coconut Punch,
Coffy Bite and Lacto King, along with
your name, date of birth and address,
and a cool name for your Parrys
Stuntman, to:
Khao Parrys Jeeto Prizes,
P.O. Box No.: 7002, Chennai - 92.
And await your Parrys Stuntman by
mail! The best names for the
Parrys Stuntman get to win
Apple iMac's!
MEGA-PRIZE
12 Apple iMac's
to be won!
Coffy Bite
Coconut Punch
Madras Cafe
Last date for entries: 25th June 2000.
Winners of the computer will be intimated by mail.
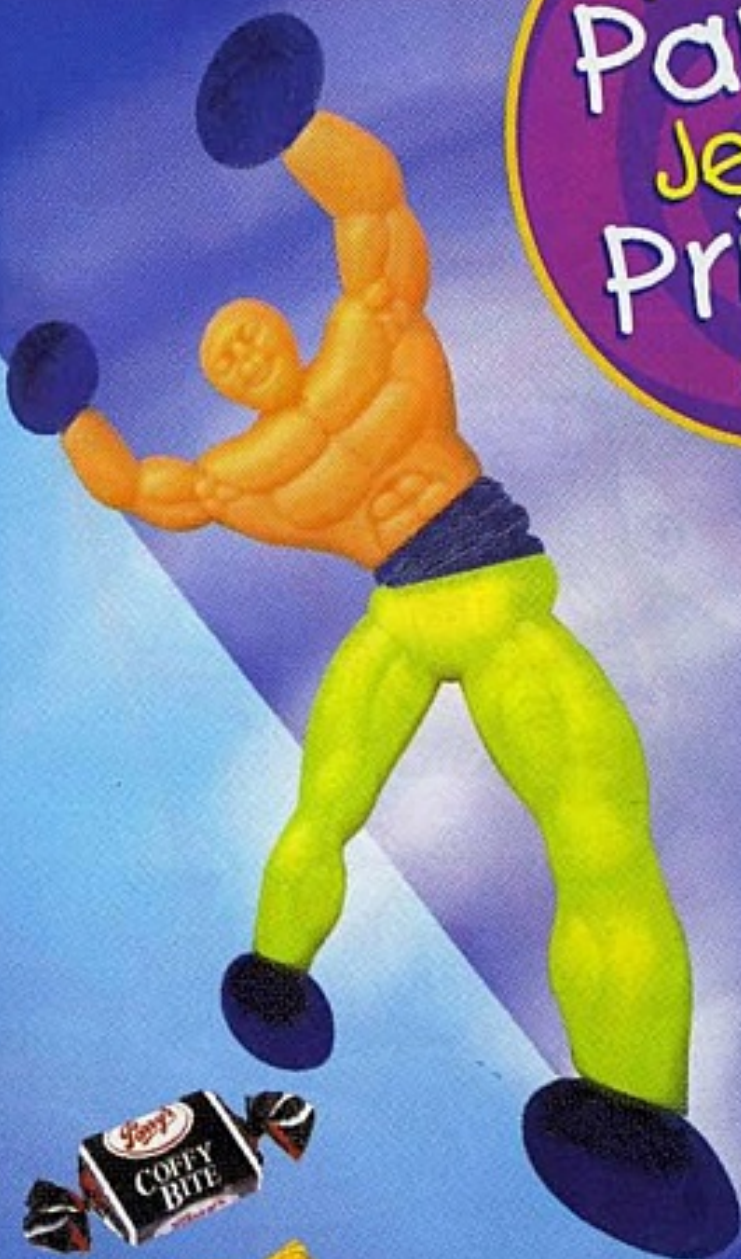
चन्दामामा

सम्पुट - 102 जुलाई 2000 सञ्चिका-7

अन्तरङ्गम्

कहानियाँ

ज्ञानप्रद धारावाहिक

पौराणिक धारावाहिक

ऐतिहासिक विभूतियाँ

विशेष

इस माह की विशेष

परमधाम का मोक्ष (वेताल कथा)

कर्ण भेदी गायक

पिशाचों का बदला

भारत की गाथा

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai-600 026 on behalf of Chandamama India Limited, Chandamama Buildings, Vadapalani, Chennai-600 026. Editor: Viswam

सबसे उत्तम

उपहार

आप अपने
दूर रहनेवाले करीबियों के लिए
सोच सकते हैं

चन्दामामा

उन्हें उनकी
पसंद की भाषा में एक
पत्रिका दें

असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़,
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल व तेलुगु

और उन्हें घर से दूर घर के
स्नेह को महसूस होने दें

शुल्क
सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक 900 रुपये

भारत में भूतल डाक द्वारा
बारह अंक 120 रुपये

अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी आर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें
सेवा में :

PUBLICATION DIVISION
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
CHANDAMAMA BUILDINGS, VADAPALANI, CHENNAI-600 026

संपादक
विश्वम

प्रधान कार्यालय :
चंदामामा प्रकाशन विभाग
चंदामामा बिल्डिंग्स
वडापलानि, चेन्नई - 600 026
फोन/फेक्स : 4841778
4842087
इ.मैल : Chandamama@ vsnl.com

मुंबई कार्यालय
2/B, नाज बिल्डिंग्स,
लेमिंगटन रोड, मुंबई - 400 004.
फोन : 022-388 7480
फेक्स : 022-388 9670

For USA
Single copy $2
Annual Subscription
$20
Mail remittances to
INDIA ABROAD
43, West 24th Street
New York, NY 10010
Tel : (212) 929-1727
Fax : (212) 627-9503

संस्थापक

चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

भारत की खोज में

एक भारतीय के बारे में रिपोर्ट थी जो बहुत बाल्यावस्था से ही पश्चिम में रहता था, क्योंकि उसके माता-पिता वहीं बस गये थे। लेकिन वह एक-दो बार भारत आया था और यह देश उसे अच्छा लगा था। उसने भारत के गौरवशाली अतीत के विषय में बहुत कुछ पढ़ा और इसपर श्रद्धा रखने लगा। उसने इस महान देश की सेवा करने के लिए भारत लौटने का निर्णय किया।

उसने स्वयं बहुत धन कमाया था और माता-पिता भी उसके लिए अपार सम्पति छोड़ गये थे। वह एक कल्याण योजना आरम्भ करने के उद्देश्य से भारत लौटा ।

"यह मत भूलो कि तुम अमुक राज्य के हो। तुम्हारा कार्य-क्षेत्र वहीं होना चाहिये।" भारत की राजधानी पहुँचने पर उसे किसी ने कहा। वह अपने राज्य में गया। लेकिन वहाँ पहुँचने पर उसे उस इलाके के बारे में बताया गया जहाँ उसके पूर्वज रहते थे । जब वह वहाँ गया तो उसे उसके धर्म और जाति की याद दिलाई गई । उसके धन का उपयोग उसी जाति के लिए होना चाहिये !

उसे भारत को खोजने में सफलता नहीं मिली और बड़े दुख के साथ वह वहाँ से लौट गया। उसने अपना धन यूनेस्को को दान में दे दिया ।

हम एक अरब भारतीय भारत को नहीं छोड़ सकते । इसका विकल्प क्या है? हमें सच्चा भारतीय बनने के लिए अपनी जाति, धर्म, क्षेत्रीयता और प्रान्तीयता से ऊपर उठना होगा। या तो ऐसा करें या विनष्ट हो जायें । तीसरा मार्ग नहीं है।

आज कुछ नये राज्यों के संगठन की बात चल रही है। कुछ लोग अपने पुराने राज्य के एक-दो नगरों को नये राज्य के लिए देने में खुश नहीं हैं। किन्तु क्या सचमुच हमसे कुछ लिया जा रहा है? क्या कोई क्षेत्र भारत से बाहर जा रहा है? नये राज्यों का संगठन प्रशासनिक सुविधा के लिए किया जाता है। जब तक वे क्षेत्र भारत के अंश हैं, तब तक डरने की कोई बात नहीं । अब समय आ गया है जब हमें केवल भारतीय के रूप में सोचना और कार्य करना है।
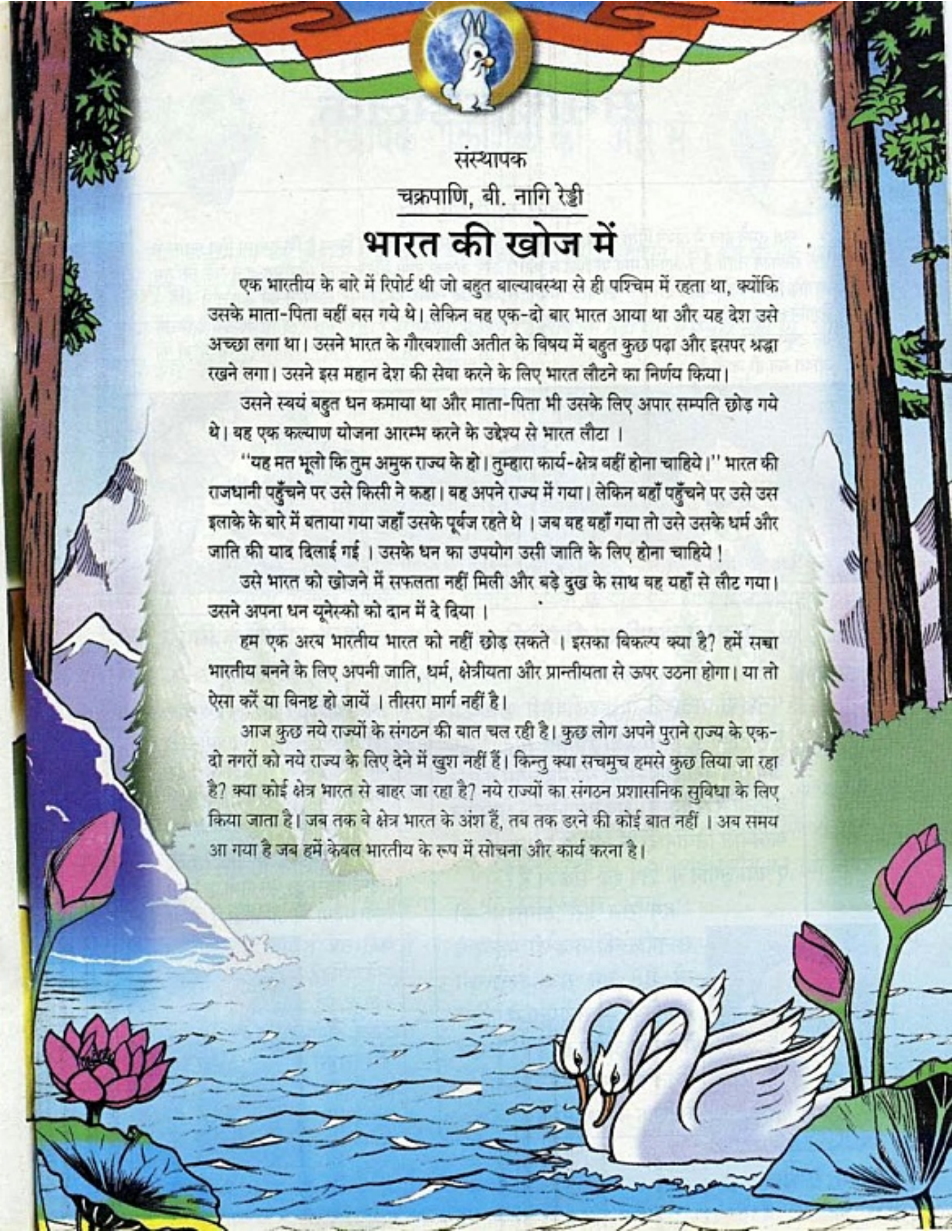
समाचार झलक

तुम्हारा नया सुशिष्ट शत्रु

क्या तुमने हाल में अपने पिता से सेलफोन खरीदने के लिए इसलिए अनुरोध किया है कि तुम्हारा मित्र क्लास में एक सेलफ़ोन लाता है ? अपनी मांग पर ज़िद न करो । और अच्छा होगा यदि तुम्हारा मित्र यह जान सके कि तुम उसका सिर्फ़ भला चाहते हो और तुम इसी भावना से उसे यह सलाह दो कि वह सेलफोन की आदत न डाले । वैज्ञानिकों को सन्देह है कि सेलफोन का प्रयोग करनेवाले बालकों को स्वास्थ्य सम्बन्धी कई खतरों का भय है जिसमें ब्रेन ट्यूमर भी शामिल है। अनुसंधान चल रहा है, लेकिन सावधान रहना बुद्धिमानी होगी। आखिर, ऐसी चीजों की आदत बन ही जाती है।

पुरुष जो मोनालिसा की प्रसिद्धि का कारण था

पन्द्रहवीं शताब्दी के इटलीवासी कलाकार लियोनार्दो द विंसी द्वारा चित्रित मोना लिसा अब तक बनाई गई संसार की महानतम कला-कृतियों में से एक है। अब वैज्ञानिक - छानबीन करनेवाले लियोनार्दो के चित्र में उसका डी एन ए पता लगाने के लिए दृढ़-संकल्प हैं।

''हम सब इसे अपराध की छानबीन की तरह ही महत्व दे रहे हैं। हम सब अदालती वैज्ञानिकों की सहायता से पुलिस के तरीके अपना रहे हैं।'' टस्कन स्थित लियोनार्दो अजायबघर के निर्देशक का कहना है।

मंगल-यात्रियों के लिए भोजन

मंगल-यात्रियों (मार्शियन) से हमारा तात्पर्य उन अन्तरिक्ष यात्रियों से है, जो मंगल ग्रह की यात्रा करेंगे । इस अभियान को पूरा करने में एक हजार दिन लगेंगे। अनुसंधान करने से पता चला है कि उन्हें शाकाहारी होना पड़ेगा और पन्द्रह ऐसे पौधों पर निर्भर रहना पड़ेगा जो अन्तरिक्ष में उगाये जा सकें । इनमें शामिल हैं - गाजर, गेहूँ, टमाटर, सोया और सबसे बेहतर - ब्लैक बीन मिर्च ।

संस्थापक-प्रकाशक की ओर से

जब 'चन्दामामा' का आरम्भ हुआ था तो भारत कुछ और था । प्रकाशन बहुत कम थे और बच्चों की पत्रिका वास्तव में एक भी नहीं थी। मुद्रण की विधि (हाथ से एक-एक अक्षर जोड़ कर शब्दों की रचना) आज के चामात्कारिक शिल्प-विज्ञान से कोसों दूर थी। टेलिविज़न नहीं था, कम्प्यूटर नहीं था, और भी बहुत कुछ जो आज के वैज्ञानिक युग की आम चीजें हैं ।

किन्तु, भारत अपने जीवन के नये चरण में प्रवेश कर रहा था। अंग्रेजी शासन से मुक्त होकर राष्ट्र अपने पाँव पर खड़ा हो रहा था।

अपने दिवंगत मित्र चक्रपाणि और हमारा, दोनों का विश्वास था कि कल के भारत के चेहरे पर मुस्कान तभी आयेगी जब आज के बच्चों को हम मुस्कुराना सिखायें। कल का भारत तभी एक शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा, जब हम आज के बालकों को अपनी महान परम्परा से प्यार करना बतायें । वे एक श्रेष्ठ साहित्य का एक साथ मिलकर आनन्द लें। वे भारतीय भावना के प्रति एक साथ मिल कर खुलें। इस प्रकार इस अद्भुत प्रयोग का, बल्कि इस साहसिक कार्य यानी 'चन्दामामा' का जन्म हुआ - जो न केवल अनेक भाषाओं में एक ही भाव, बल्कि विकासशील आत्माओं के लिए भारतीय आख्यानों, पौराणिक कथाओं और लोक साहित्य के अक्षय भण्डार का 'खुल जा सिमसिम' बन गया ।

चन्दामामा धीर-धीरे घर-घर लोकप्रिय हो गया। अपने जीवन-मार्ग के उतार-चढ़ाव से होता हुआ यह आगे बढ़ता गया। हाल के दिनों में इसने अपने जीवन का सबसे बड़ा संकट झेला जब एक वर्ष से भी अधिक समय तक इसका प्रकाशन बन्द रहा । किन्तु, इसके पीछे की अदम्य सद्भावना फिर से जीत गई है। मैं उन साहसी आत्माओं को बधाई देता हूँ, जिन्होंने इसके रथ के पहियों को दौड़ कर उठा लिया जो धँस गये थे, और इसके लक्ष्य के पथ पर उन्हें पुनः स्थापित कर दिया।

यह मेरे लिए दुगुनी खुशी का मौका है - पहला इसलिए कि यह प्रकाशन अपनी ५३ वीं जयन्ती मना रहा है और दूसरा इसलिए कि थोड़ी सी बेहोशी के बाद यह नई शक्ति के साथ जाग पड़ा है।

चन्दामामा की सफलता के लिए, इसके पाठकों, शुभचिंतकों तथा संरक्षकों को मेरी शुभ-कामनाएँ!

- बी. नागि रेड्डी

कहानी को सही अन्त दीजिए और पुरस्कार जीतिए

सृजनात्मक प्रतिस्पर्द्धा

नीचे एक कहानी का आरंभ दिया गया है। इसमें एक रोचक कहानी बनने के सभी उपादान मौजूद हैं। लेकिन वह सृजन तुम्हारे हाथ में है। तुम्हें सभी संभावित कथाक्रमों की कल्पना करनी है और कहानी को पूर्ण करना है। और एक आकर्षक शीर्षक भी देना है। याद रहे, यह तुम्हें दो सौ से लेकर तीन सौ शब्दों के बीच में करना है। न कम, न अधिक । सर्वोत्तम प्रविष्टि को आकर्षक पुरस्कार मिलेगा और उसे पत्रिका में प्रकाशित भी किया जायेगा। यह प्रतिस्पर्द्धा बाल पाठकों के लिए है। अपना नाम, उम्र, कक्षा, विद्यालय का नाम तथा पिन कोड के साथ घर का पता लिखना न भूलना । यह सिद्ध कर दो कि तुम बड़ों से अच्छा लिख सकते हो। इसलिए उनसे मदद नहीं लेना। कहानी इस प्रकार है :

प्रायः लोग प्राचीन गुरुओं को गंभीर व्यक्ति समझते हैं। लेकिन एक अपवाद था । यह गुरु हँसी-मजाक बहुत पसन्द करता था और उसके कुछ शिष्य भी मजाकिया थे। वे इतने हमदर्द थे कि गुरु के पैदल चलने पर उन्हें बहुत कष्ट होता था। ''नहीं, हम उन्हें अपने कंधों पर ले चलना चाहिये।'' एक अन्य शिष्य ने सलाह दी। ''किन्तु बुढ़ापे के कारण वे संतुलन नहीं रख सकते और कहीं गिर गये तो हम सब बदनाम हो जायेंगे।'' एक शिष्य ने सावधान किया। ''ठीक है, फिर क्यों नहीं उनके लिए एक घोड़े का प्रबंध कर दें?'' बहुत सोच-विचार के बाद किसी ने यह सलाह दी । ''यह बहुत अच्छा ख्याल है, लेकिन गुरु से सलाह ले लेना चाहिये।'' एक शिष्य के मन में विचार आया। भाग्य से गुरु को यह बात पसन्द आ गई।'' लेकिन घोड़ा अच्छा होना चाहिये।'' गुरु ने कहा। बाजार के रास्ते में झील के किनारे उन्होंने कुछ घोड़ों को देखा । बाजार में उन्होंने घोड़ों के दाम पूछे। उन्हें आश्चर्य हुआ। ''यह तो बहुत महँगा है।'' एक शिष्य ने टिप्पणी की।'' मेरी बात मानो।'' एक दूसरे शिष्य ने टोका । ''क्यों नहीं हम घोड़े का अंडा खरीद लें और बछड़ा निकलने तक उसे ऊष्ण रखें।'' इस विचार की सबने प्रशंसा की। जब यह प्रस्ताव गुरु को बताया गया तो उसने कहा, - ''मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि तुम लोगों में मेरी कुछ बुद्धि आ गई है।''......
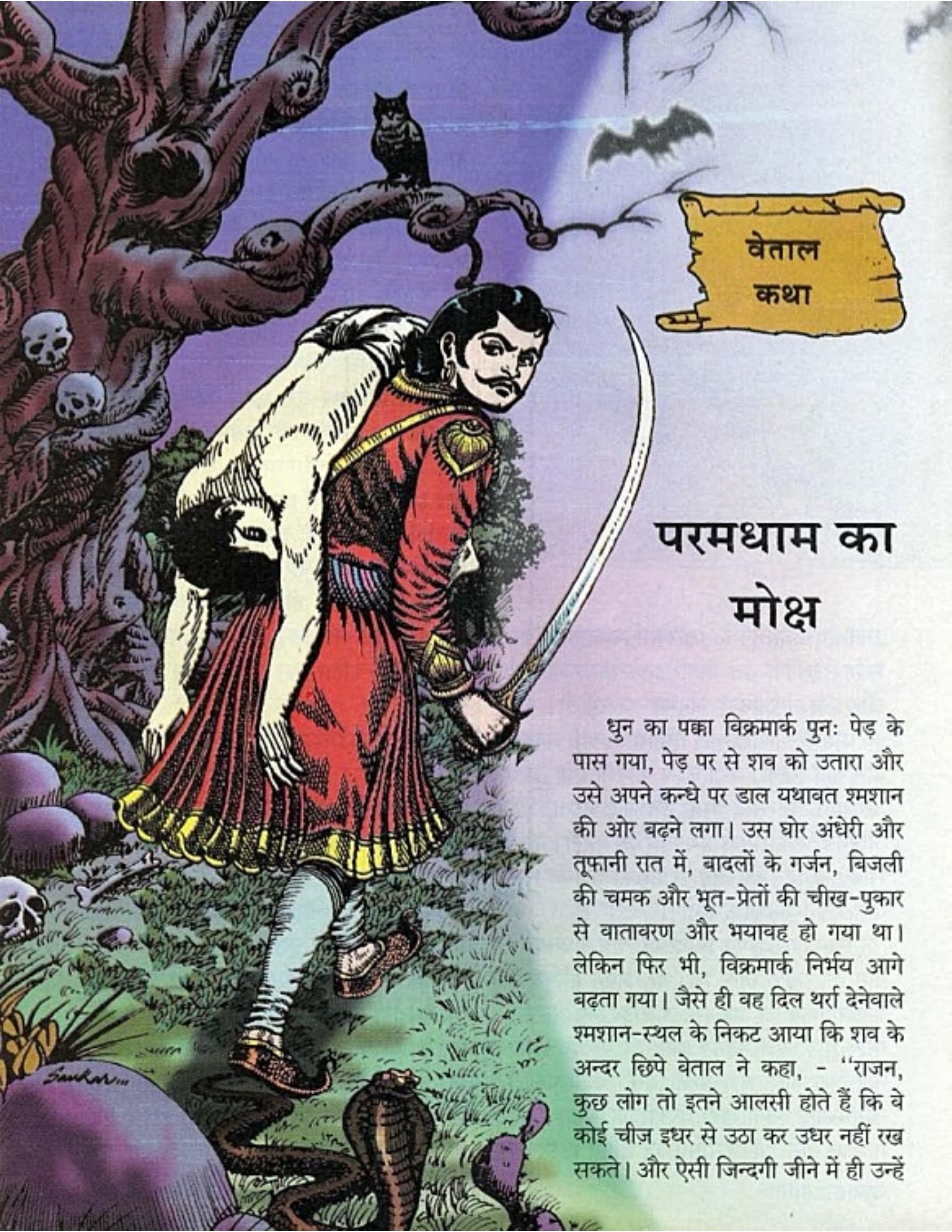
क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि गुरु और उसके शिष्यों का क्या हाल हुआ होगा। कहानी लिख कर उसका शीर्षक देना न भूलो । अपनी प्रविष्टि पर ''सृजनात्मक प्रतिस्पर्द्धा'' लिख कर 25 जुलाई तक भेज दो ।

- सम्पादक

जून 2000 की 'भारत की खोज' प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. अ. गुणाढ्यकृत बृहत् कथा द्वारा प्रेरित दशकुमारचरित
   ब. विश्वास किया जाता है कि योगवसिष्ठ रामायण की रचना वसिष्ठ और वाल्मीकि - दो ऋषियों ने मिल कर की ।
   स. विसाखदत्त कृत मुद्राराक्षस
   द. शूद्रक । इसकी प्रसिद्ध कृति है - मृच्छकटिकम्
2. अर्जुन, बभ्रुवाहन, उलुपी।

परमधाम का मोक्ष

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतारा और उसे अपने कन्धे पर डाल यथावत श्मशान की ओर बढ़ने लगा। उस घोर अंधेरी और तूफानी रात में, बादलों के गर्जन, बिजली की चमक और भूत-प्रेतों की चीख-पुकार से वातावरण और भयावह हो गया था। लेकिन फिर भी, विक्रमार्क निर्भय आगे बढ़ता गया। जैसे ही वह दिल थर्रा देनेवाले श्मशान-स्थल के निकट आया कि शव के अन्दर छिपे बेताल ने कहा, - "राजन, कुछ लोग तो इतने आलसी होते हैं कि वे कोई चीज़ इधर से उठा कर उधर नहीं रख सकते। और ऐसी जिन्दगी जीने में ही उन्हें

आनन्द आता है। पर, इसके विपरीत, तुम इस भयंकर तूफानी रात में भी इतने प्रयत्नशील हो और इसी में आनन्द अनुभव कर रहे हो। यदि इन प्रयत्नों के पीछे कोई तुम्हारा लक्ष्य है तो एक बात याद रखना। कहीं लक्ष्य की सिद्धि के समय परमधाम की तरह भूल मत कर बैठना और अविवेकी के समान व्यवहार न करना। तुम्हें सावधान करने की दृष्टि से उसकी कहानी सुना देता हूँ। ध्यानपूर्वक सुनो।''

एक जंगल के एक निकटवर्ती गाँव में परमधाम नाम का युवक रहता था। वह अपने परिवार में अकेला था। वह परिश्रमी होते हुए भी अत्यन्त गरीब था। बहुत मेहनत करने भी भर पेट खाना नहीं जुटा पाता था। बहुत मिन्नत करने पर भी उसे मजदूरी इतनी थोड़ी मिलती कि गुजारा करना मुश्किल होता था। इसलिए वह जीवन से निराश हो गया और जंगल जाकर तपस्या करने लगा। उसकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान प्रकट हो गये और वर माँगने को कहा।

''मुझे मोक्ष दो प्रभु। जीवन-मरण से मुक्ति दो। मुझे अपनी सत्ता में विलीन कर लो।'' परमधाम ने वर मांगा।

भगवान मुस्कुराते हुए स्नेहपूर्वक बोले, - ''वत्स, मानव जीवन इसलिए दिया जाता है कि मनुष्य अपने लिए जीते हुए दूसरों के लिए भी कुछ करे। इसी में मानव-देह-धारण की सार्थकता है। तुमने दोनों में से एक भी कर्म नहीं किया। अतः तुम्हें अभी मोक्ष नहीं दिया जा सकता। तुम्हें मैं कुछ अद्‌भुत शक्तियाँ प्रदान करता हूँ। इनके द्वारा दूसरों की भलाई करो। जब तुम पूर्ण निस्वार्थ भाव से परोपकार करने लग जाओगे, तब तुम्हारा मानव जीवन धन्य हो जायेगा। तुम मोक्ष के अधिकारी हो जाओगे। तब तक मानव सेवा करते रहो।'' इतना कह कर भगवान अन्तर्धान हो गये।

परमधाम को संसार की किसी चीज़ के प्रति आसक्ति नहीं रह गई थी। वह शीघ्रातिशीघ्र मोक्ष प्राप्त कर लेना चाहता था। जंगल से लौटते समय उसे एक युवक दिखाई पड़ा। वह अपने सिर को उलटा करके हाथों के बल पर चल रहा था। परमधाम को उसे देख कर आश्चर्य हुआ और उससे इसका कारण पूछा।

''मेरे पिता किसी गुप्त रोग से पीड़ित हैं और शैय्याग्रस्त हैं। दवा प्रभावहीन हो गई है। हमारे गाँव के पुजारी ने कहा कि उन पर कोई दुष्टात्मा सवार हो गई है। यदि मैं हर रोज़ कुछ समय तक इस प्रकार चलूँ तो वह दुष्टात्मा शांत हो जायेगी और मेरे पिता स्वस्थ हो जायेंगे।'' युवक ने बताया।

"क्या इस तरह हाथों के बल चलने से तुम्हें कष्ट नहीं होता?" परमधाम ने पूछा।

"क्यों नहीं? बहुत कष्ट होता है। इसके अतिरिक्त, मेरा बायां हाथ बचपन से कमजोर है। वैद्य ने चेतावनी दी है कि कुछ दिन और इसके बल चलता रहूँ तो यह हाथ अपंग हो जायेगा । किन्तु यदि मेरे इस हाथ की कीमत पर भी मेरे पिता स्वस्थ हो जायें तो इससे बढ़कर मुझे और क्या सुख और आनन्द होगा?" उसने अपना बायां हाथ दिखाते हुए कहा। "उनके पूर्ण स्वस्थ हो जाने पर मैं अधिक सुख और शान्ति से जी सकूँगा।"

युवक की परोपकार - भावना से प्रभावित होकर परमधाम ने कहा, - "तुम वास्तव में एक श्रेष्ठ कोटि के मनुष्य हो। तुम्हारा पुण्य ही तुम्हें और तुम्हारे पिता को स्वस्थ कर देगा। तुम अब हाथों के बल चलना बन्द कर दो और सहर्ष घर लौट जाओ। मेरी बात व्यर्थ नहीं जायेगी।"

युवक खड़ा होते हुए बोला, - "तब तो आप मेरे घर चल कर मेरे पिता को भी दर्शन देने की कृपा करें।"

"मैं किसी के घर जाकर उसका प्रतिफल या सेवा-सत्कार स्वीकार नहीं करता।" परमधाम ने कहा।

"स्वामी, हम असमर्थ मनुष्य भला आप जैसे महात्माओं को क्या प्रतिफल दे सकते हैं? मैं तो इसलिए घर चलने की प्रार्थना कर रहा हूँ कि मेरे पिता जी के साथ-साथ गाँव के अन्य पीड़ित लोग भी आप के दर्शन से लाभान्वित हो जायेंगे।" युवक ने कहा।

"अच्छा, यह बात है तो ठहरो, एक काम कर लूँ।" परमधाम ने कहा।

फिर परमधाम ने शान्तभाव से आँखें बन्द कर अपने हृदय में भगवान का स्मरण किया और कहा, - "हे प्रभु, मैंने निःस्वार्थ भाव से एक परोपकार किया है। अब तो मुझे अपने आप में विलीन कर लो।"

"तुमसे बढ़ कर कितने ही निस्वार्थ परोपकार करनेवाले हैं। उन्हें भी अभी तक मैंने मोक्ष नहीं दिया। तो तुम्हें इतनी जल्दी कैसे मोक्ष मिल जायेगा? वह युवक भी तुमसे अधिक परोपकारी है, जिसके सामने तुम खड़े हो।" हृदय से भगवान की आवाज आई।

"भला यह युवक मुझसे बड़ा परोपकारी कैसे हो सकता है?" आश्चर्य से परमधाम ने पूछा।

"जिस समय तुम्हें यह रहस्य मालूम हो जायेगा, उसी क्षण तुम्हें मोक्ष मिल जायेगा। तुम इस समय इसके साथ चले जाओ ।" भगवान ने कहा।

भगवान का आदेश पाकर परमधाम युवक के साथ उसके घर चला गया। उस समय तक युवक का पिता स्वस्थ हो चुका था। युवक ने परमधाम के बारे में ग्रामीणों को भी बता दिया कि इन महात्मा के आशीर्वाद से ही उसके पिता का रोग ठीक हो गया। यह सुनकर गाँव के सभी लोग परमधाम के दर्शन के लिए उमड़ पड़े। और अपने-अपने दुःख से मुक्ति के लिए उनका आशीर्वाद मांगने लगे।

कोई रोग से पीड़ित था। कोई ऋण से। कोई बहू अपनी सास से दुखी थी, तो कोई सास अपनी बहू से। किसी की फसल मारी गई थी तो किसी के कुएँ का पानी सूख गया था। परमधाम के आशीर्वाद और उसकी अद्‌भुत शक्ति से, जो भगवान ने उसे दी थी, गाँव के सभी लोग सुखी-सम्पन्न हो गये। किसी की कोई समस्या नहीं रही। गाँव स्वर्ग बन गया।

उस गाँव में रंगा नाम का एक बदमाश था। इसकी सहायता से धनी लोग गरीबों को सताते थे। गाँव में अब किसी की कोई समस्या या दुख नहीं था, इसलिए रंगा का भी कोई काम न रहा। उसे अब कोई पूछता नहीं था। इसलिए उसके मन में वैराग्य आ गया।

वह भी एक दिन परमधाम के पास जाकर बोला, - "स्वामी, मैं बहुत दुष्ट व्यक्ति हूँ। मैंने लोगों को बहुत सताया है। लेकिन अब ऐसा विचार आते ही कष्ट होता है। इससे मुक्ति के लिए मोक्ष ही एक मार्ग है। कृपा करके मुझे मोक्ष प्रदान कीजिये।"

"इसके अतिरिक्त और कुछ मांग लो - धन, आभूषण, गृह, वाहन। सब देने को तैयार हूँ। किसी अन्य गाँव में सम्मान के साथ जीने का साधन दे सकता हूँ। लेकिन मोक्ष नहीं दे सकता।" परमधाम ने कहा।

"नहीं स्वामी, कहीं अन्य गाँव चला गया तो पूर्व रंगा के समान ही आचरण करूँगा। पुनः

लोगों को सताना शुरू कर दूँगा। मुझे अब मोक्ष प्रदान कर इस पापमय जीवन से मुक्ति दिलाने की कृपा करें। यह आप जैसे महात्मा की कृपा से ही संभव हो सकता है।" रंगा ने परमधाम के चरण-स्पर्श करते हुए प्रार्थना की।

"अच्छा, विचार करूँगा। कल आना।" परमधाम ने कहा।

रंगा के चले जाने के बाद परमधाम ने पुनः आप ही परमधाम के सम्मुख प्रकट हुए और कहा, - "पुत्र, तुम्हें मोक्ष प्रदान कर रहा हूँ।"

"नहीं, मुझे अब मोक्ष नहीं चाहिये प्रभु।" परमधाम ने निश्चयपूर्वक कहा।

"तुम्हारा कर्त्तव्य पूरा हो चुका। आज सायंकाल पवित्र नदी के जल में स्नान करके मेरा ध्यान करना। तुम्हें भी मोक्ष मिल जायेगा।"

भगवान इतना कह कर अदृश्य हो गये।

व्यक्ति को परमधाम इतनी आसानी से मोक्ष प्रदान कर देता है। क्या वह भी उसकी नादानी नहीं है? यदि मेरे इन सन्देहों का उत्तर जानते हुए भी नहीं दोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

राजा विक्रमार्क ने वेताल के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा, - "परमधाम के मोक्ष को इनकार करने के पीछे परोपकार और त्याग की उसकी महान भावना है। उसकी विवेकहीनता नहीं। वह प्रभु से प्राप्त अद्भुत शक्तियों से अधिक से अधिक जन-कल्याण करना चाहता है। भगवान ने मानव-कल्याण के लिए ही उसे अद्भुत शक्तियाँ प्रदान की थीं। भगवान की सृष्टि की सेवा भगवान की सेवा है। इस मर्म को समझ कर ही उसने अपने मोक्ष का पुण्य रंगा को दे दिया और अपने मोक्ष का त्याग कर दिया। इसी भावना से उसने मोक्ष को अस्वीकार कर दिया। जब तक उसे यह ज्ञान नहीं था, जब वह जीवन को भार समझता था, तब वह जीवन के झंझटों से भागने के लिए मोक्ष की कामना करता था। यदि उस समय उसे मोक्ष दे दिया जाता तो उसकी आत्मा, मन और प्राण का विकास न होता।

जहाँ तक रंगा जैसे दुष्ट व्यक्ति को मोक्ष दिलाने का प्रश्न है, यह भी अविवेकपूर्ण नहीं कहा जा सकता। रंगा में सच्चे पश्चाताप का उदय हो गया था। वह अपने जीवन को बदलना चाहता था। उसमें सच्चा वैराग्य जाग्रत हो गया था। यदि परमधाम उसे उसी समय मोक्ष नहीं दिलवाता या उसके लिए अपने मोक्ष का त्याग नहीं करता तो उसे डर था कि रंगा पुनः दुष्ट व्यक्ति बन जाता। ऐसा करके उसने एक दुष्टात्मा का उद्धार कर दिया, साथ ही उसके अत्याचार से लोगों की रक्षा भी कर दी।

जब परमधाम पूर्ण रूप से निस्वार्थ हो गया, जब उसकी आत्मा शुद्ध और निर्मल हो गई, जब भगवान ने, उसे यंत्र बना कर उससे पृथ्वी पर मानव-कल्याण के लिए जितना कर्म करवाना था, करवा लिया, जब उसकी भूमिका पूरी हो गई तो उसे भी मोक्ष प्रदान कर दिया।

इसलिए परमधाम के जीवन में कहीं विरोधाभास नहीं है। तुम्हारा सन्देह निराधार और अज्ञान सूचक है, वेताल।

राजा के मौन-भंग में सफलता मिलते ही वेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पुनः उसी पेड़ पर जा बैठा।

इस महीने जिनकी जयन्ती है :
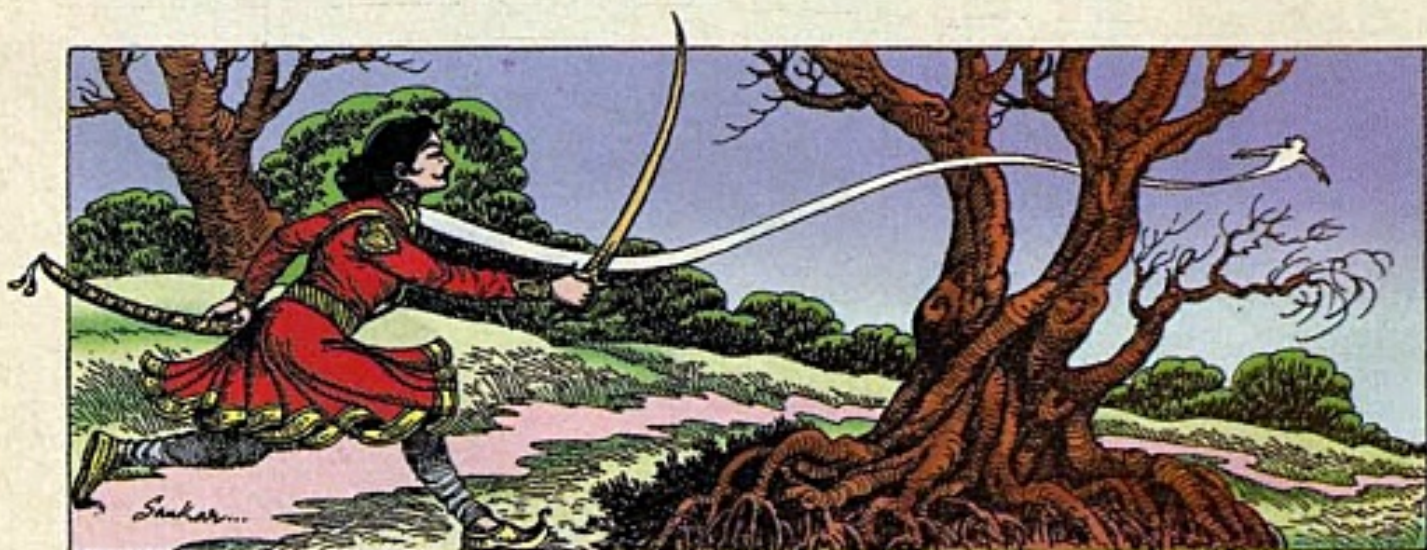
सन् 1856 में 23 जुलाई को जन्मे बाल गंगाधर तिलक या तिलक महाराज, जो इनका अधिक लोकप्रिय नाम है, ''भारतीय क्रांति के जनक'' के रूप में याद किये जाते हैं, जबकि इनके यशस्वी राजनीतिक सहकर्मी श्रीअरविन्द (तब अरविन्द घोष) को ''भारतीय राष्ट्रीयता का पैगम्बर'' कहा जाता है। दोनों ने मिल कर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को एक उग्र मोड़ दिया ।

बाल गंगाधर तिलक

तिलक महाराज महाराष्ट्र में रत्नगिरि में पैदा हुए थे। इन्होंने कानून का अध्ययन किया था, किन्तु वकालत करने के बदले ये सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकार बन गये। इन्होंने दो शक्तिशाली समाचार पत्रों का सम्पादन किया - अंग्रेजी में 'मराठा' और मराठी में 'केशरी' का।

उन्होंने सन् 1897 में महान मराठा वीर शिवाजी की स्मृति में एक वार्षिक समारोह का आयोजन आरम्भ किया। इससे जनता में देश भक्ति की प्रेरणा उत्पन्न करने में काफी सफलता मिली। पुणे में प्लेग की महामारी फैल गई और इसके विस्तार को रोकने के नाम पर ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों ने आम जनता को बहुत सताया और अपमानित किया। तिलक ने इसके लिए ब्रिटिश सरकार की आलोचना की। फलस्वरूप, उन्हें राजद्रोह के आरोप में जेल भेज दिया गया।

सन् 1907 में सूरत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ। श्रीअरविन्द और तिलक के नेतृत्व में बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने अंग्रेजों से पूर्ण स्वराज्य मांगने के लिए कांग्रेस पर दबाव डाला । प्रतिनिधियों का दूसरा दल, जिसे नरम दल या मोडरेट्स कहा जाता था, इस साहसिक कदम के लिए तैयार नहीं था। फलस्वरूप कांग्रेस में बिभाजन हो गया। कांग्रेस के सक्रिय दल ने श्रीअरविन्द के नेतृत्व में अधिवेशन जारी रखा, जिसमें तिलक प्रमुख वक्ता थे।

श्रीअरविन्द सन् 1910 में पांडिचेरी आ गये और तिलक महाराज का सन् 1920 के अगस्त में देहान्त हो गया। उसी वर्ष दिसम्बर में कांग्रेस ने अपने नागपुर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य के समर्थन में प्रस्ताव स्वीकार कर दिया।

तिलक महाराज केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं थे, बल्कि विद्वान भी थे। उनकी अमर कृतियों में 'गीता रहस्य' और 'ऑरायन' अधिक प्रसिद्ध हैं ।

व्यायाम रास न आया

एक राजा के दो पुत्र थे - अजेय और विधेय। दोनों ही कुशाग्र-बुद्धि और होनहार थे। दोनों ने सोलह वर्ष की आयु में ही सभी विद्याएँ सीख लीं।

अब राजा के सामने यह समस्या थी कि दोनों में से किसे राज्य भार सौंपें, क्योंकि दोनों ही समान रूप से इसके योग्य थे। बहुत विचार करने के बाद उसने यह निश्चय किया कि राजा को सर्वप्रथम

आकर्षक होगा, उसी को राजा बनाया जायेगा। लेकिन याद रहे, तुम राजकुमार हो, यह रहस्य किसी को पता न चले।"

उस राज्य में जयमल्ल नाम का एक पहलवान था। वह एक वर्ष में एक ही शिष्य को सिखाता था। वह मल्ल युद्ध की कला के साथ-साथ ऐसे व्यायामों में भी दक्ष था जिनसे शरीर के अंग-अंग

कुछ उपाय नहीं किया और भाग्य भरोसे बैठे रहे। फलतः किसी के पास खाने को एक दाना भी नहीं रहा। गाँव भीषण अकाल के कगार पर पहुँच गया।

विधेय ने गाँव को सुधारने का निश्चय किया। वह ग्राम अधिकारी से मिला और उससे कहा कि गाँववाले मिल कर परिश्रम करें तो इसका भाग्य पलट सकता है। लेकिन ग्राम अधिकारी भी गाँव वालों की तरह ही सुस्त था। इसलिए उसने विधेय की बातों को गंभीरता से नहीं लिया और उसे हँसी-मज़ाक में उड़ा दिया। लेकिन विधेय ने गाँव को सुधारने और गाँववालों में विश्वास पैदा करने का संकल्प कर लिया था, इसलिए उसने ग्राम अधिकारी के सामने अपना वास्तविक परिचय दे दिया।

ग्राम अधिकारी राजकुमार का परिचय सुनते ही घबरा गया। उसने तुरन्त गाँववालों को बुला कर राजकुमार का परिचय देते हुए उनका गाँव में आने का प्रयोजन बताया।

''यह गाँव शापग्रस्त है। हमारे परिश्रम करने से कोई लाभ नहीं होगा।'' एक वृद्ध ने निराश होकर कहा।

''इस शाप से गाँव को मुक्त करने के लिए ही मैं यहाँ आया हूँ। कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। कठिन परिश्रम ही शाप का उपाय है। जैसा मैं कहता हूँ, वैसा तुम सब मिल कर करोगे तो परिश्रम का फल मीठा मिलेगा। यदि मेरा साथ नहीं दोगे तो तुम्हारी दरिद्रता कभी नहीं दूर होगी। साथ ही, तुम्हें राजदण्ड भी मिलेगा।'' राजकुमार विधेय ने उन्हें प्रेरक तथा भयभीत करनेवाले शब्दों से उत्साहित करने का प्रयास किया।

कुछ लोगों ने हृदय से प्रेरित होकर तथा कुछ अन्य लोगों ने भय से राजकुमार का साथ देने का निर्णय किया। इस प्रकार सारा गाँव राजकुमार के निर्देशन में कठिन परिश्रम में जुट गया। सबने मिल कर सैकड़ों कुएँ एवं तालाब खोद दिये, जिससे सिंचाई की व्यवस्था हो गई। सबने अपने-अपने खेतों में फसलें लगाईं। सिंचाई के कारण सबकी फसल अच्छी हुई। अगले वर्ष वर्षा का पानी

तालाबों में भर जाने से पानी की कमी नहीं रही। लोगों ने गाँव के चारों ओर वृक्ष लगाये और सड़कें बनाईं। दो वर्षों में गाँव की काया-पलट हो गई। विधेय अपने महल में पिता के पास लौट गया।

अजेय राज महल में पहले ही पहुँच चुका था। राजा ने दोनों की कहानियाँ सुनीं और दोनों के शारीरिक सौष्ठव को देखा। दोनों ही स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक थे। लेकिन अजेय का शरीर अधिक गठीला और पुरुषोचित था। उसने राजा बनने का दावा करते हुए कहा, - "मैंने एक वर्ष में ही आप की शर्त पूरी कर दी। इसके अतिरिक्त, मैं शर्त के अनुसार अपने राजकुमार होने का रहस्य किसी के सामने प्रकट नहीं किया, जबकि विधेय ने इस शर्त को भंग कर दिया। इसलिए राजा बनने का अधिकार केवल मुझे है।"

राजा ने मुस्कुराते हुए कहा, - "देश मिट्टी, पहाड़ आदि जड़ पदार्थ को नहीं कहते। देश मनुष्यों से बनता है। प्रजा जीवन्त सत्ता है। वही देश है। परिश्रम वही सार्थक है जो प्रजा के लिए, उसके कल्याण और उत्थान के लिए किया गया हो। तुम दोनों ने ही कठोर श्रम किया, इसमें कोई सन्देह नहीं। तुम दोनों के शरीर का गठन और सौष्ठव आकर्षक है। लेकिन तुम्हारा श्रम केवल अपने शरीर के लिए किया गया है, जबकि विधेय का श्रम प्रजा के कल्याण के लिए किया गया है।

"इसके अतिरिक्त तुमने केवल मुझे प्रसन्न करके राजा बनने के लिए श्रम किया। उसके कार्य से सारी प्रजा प्रसन्न है। दरिद्रता से ग्रस्त गाँव आत्म निर्भर हो गया।

"यद्यपि वह उम्र में तुमसे छोटा है, किन्तु मेरे विचार से राजा बनने का अधिकारी वही है। लेकिन जो काम राजा नहीं कर सकता उसे तुम पूरा कर सकते हो। इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम सेनापति के रूप में राज्य-संचालन में मुख्य भूमिका का निर्वाह करो और दोनों भाई मिल कर प्रजा की देख-भाल करो।

"मेरी बात यदि स्वीकार कर लो तो तुम दोनों के भीतर छिपे श्रेष्ठ गुणों का निरन्तर विकास होता रहेगा और उनसे पूरे राज्य को लाभ होगा।"

अजेय ने पिता की शर्त्त का वास्तविक मर्म समझ लिया और उनका आदेश सहर्ष स्वीकार कर लिया।

स्वर्ण-सिंहासन

8

(**अब तक** : सुवर्णगिरि का राजकुमार मलयध्वज उस समय गुरुकुल में विद्याध्ययन कर रहा था। पिता की हत्या का समाचार सुनकर वह अपने पिता के मित्र सिंहगुप्त से मिलता है और उसकी युवरानी शालिनी को लेकर गुप्तवेश में सुवर्णगिरि की राजधानी में प्रवेश करता है। वहाँ एक देशभक्त नागरिक की सहायता से बज्रकीर्ति और कन्दर्प के शयन कक्ष के पहरेदारों को अपने पक्ष में मिला लेता है। **- तदोपरान्त**)

आधी रात के बाद मलयध्वज ने गुरु की सहायता से वज्रकीर्ति के शयनागार में प्रवेश किया। उस समय वह गाढ़ी निद्रा में सो रहा था। मलयध्वज ने उसे पाँव से ठोकर मार कर जगा दिया। अपने सामने नंगी तलवार के साथ एक युवक को देख कर बज्रकीर्ति चीख पड़ा। मलयध्वज ने उसके मुँह को बन्द करते हुए कहा, - "तुमने कपट से मेरे राज्य पर आक्रमण कर सोये हुए मेरे पिता की हत्या कर दी। लेकिन मैं तुम्हें जगा कर न्यायपूर्वक ही मार रहा हूँ।" इतना कह कर उसने वज्रकीर्ति की छाती में तलवार घुसेड़ दी।

उसी समय वीर की सहायता से पुरुष वेश में शालिनी ने विश्वासघाती सेनापति कन्दर्प के शयनागार में प्रवेश कर उसे जगाया। उसके जगते ही उसने उसके शरीर में विषपूरित सूई चुभो दी। कुछ ही क्षणों में वह मौत की गोद में सदा के लिए सो गया।

मलयध्वज वज्रकीर्ति को मार कर गुरु के साथ कन्दर्प के कक्ष की ओर बढ़ ही रहा था कि मार्ग में ही शालिनी मिल गई। उसने कूट भाषा में संकेत से कहा कि काम हो गया।

लक्ष्मी गायत्री

मलयध्वज ने वीर को आदेश देकर राज महल के सभी पहरेदारों को वहाँ बुलवाया और अपना परिचय देकर कहा, - ''यहाँ का राजा अब मैं हूँ। विश्वासघाती कन्दर्प और कपटी वज्रकीर्ति को उनके पाप की सजा मिल चुकी है। मेरे आदेश के बिना महल में जो भी आये उसे बन्दी बना लो। आज की रात बहुत भयावनी है। खबरदार, एक चिड़िया भी यहाँ प्रवेश नहीं कर पाये। जाओ सतर्कता से अपने अपने कर्त्तव्य का पालन करो।''

उसके बाद मलयध्वज बन्दीगृह की ओर बढ़ा। उसने बन्दीगृह अधिकारी को कहा, - ''मैं राजकुमार मलयध्वज हूँ। कन्दर्प और वज्रकीर्ति मारे जा चुके हैं। मैं अपने मंत्री और राजा के भक्त सेनाधिकारियों को मुक्त करने आया हूँ।'' बन्दी गृह अधिकारी ने तुरन्त मंत्री और सेनाधिकारियों को मुक्त कर दिया।

''मंत्रीवर, अब आप पुनः राज्य के संचालन का भार अपने हाथ में लीजिये। रास्ते के सभी काँटे दूर हो चुके हैं। कन्दर्प और वज्रकीर्ति मारे गये। कल प्रातः ही नये राजा की घोषणा होनी चाहिये। अभी तक दोनों की मृत्यु की खबर महल से बाहर नहीं पहुँची है। अब आप जैसा उचित समझें, करें।'' मलयध्वज ने मंत्री को सादर प्रणाम करते हुए कहा।

''साधुवाद मलयध्वज ! तुमने पिता का बदला लेकर अपना राज्य भी वापस ले लिया, यह तुमने वीरता का काम किया है। अब सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। लेकिन यह युवक तुम्हारे साथ कौन है?'' शालिनी की ओर संकेत कर मंत्री ने पूछा।

''बाद में बताऊँगा। यह इसके लिए उपयुक्त समय नहीं है। अभी मेरे लिए क्या आदेश है?'' मलध्वज ने कहा।

''तुम अभी विश्राम करो। प्रातः सात बजे सभा भवन में उपस्थित हो जाना।'' मंत्री ने कहा।

इसके बाद मंत्री सेनाधिकारियों को लेकर जो इनके साथ बन्दी थे सीधे सेना शिविर में गये और सभी सेनाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा, - ''हमारे पुराने राजा के राजकुमार ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली है। प्रातः सात बजे सभा भवन में उनका राज्याभिषेक होगा। राज्य का अनुशासन सेना का दायित्व होगा। कन्दर्प और वज्रकीर्ति के परिवार अगले

फैसले तक बन्दीगृह में रहेंगे। सबेरे पाँच बजे नगर भर में यह मुनादी करा दो कि प्रजा भी इस समारोह में शामिल हो सकती है।''

सबेरे आक्रामक राजा और कन्दर्प की मौत और युवराज मलयध्वज के राज्याभिषेक पर प्रजा ने आनन्दोत्सव मनाया ।

राजा घोषित होने के बाद मलयध्वज ने गुरु को सोने और चाँदी की अनगिनत अशर्फियाँ भेंट कीं। और वीर को बुला कर कहा, - ''तुमने एक दुष्ट और बिश्वासघाती का साथ दिया है । तुम विषैले कीट की तरह खतरनाक हो । तुम किसी प्रकार की जिम्मेदारी लेने लायक नहीं हो । मैंने तुमसे मदद ली है, इसलिए प्राणदान दे रहा हूँ । तुम आज से राज उद्यान में पौधों की देखभाल करोगे ।''

फिर उसने सुकेतु को सपरिवार अपने साथ राज भवन में भोज के लिए निमंत्रित किया और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा, - ''आपने मेरे साथ संकट में भी अपने बन्धु के समान स्नेहपूर्ण व्यवहार किया, इसलिए आप मेरे बन्धु हैं । भविष्य में राजमहल के हर उत्सव में आप हमारे सम्मानित अतिथि रहेंगे ।''

एक सप्ताह के पश्चात मलयध्वज ने परिवार सहित भील राजा सिंहगुप्त को आमंत्रित करके शालिनी के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा। कुछ दिनों में विवाह होने के बाद दोनों प्रजा के कल्याण-कार्य में लग गये ।

दूसरी सालभंजिका ने कहानी यहीं समाप्त कर विजयदत्त से कहा, - ''युवराज विजयदत्त, शालिनी के अतिरिक्त मलयध्वज को उसके उद्देश्य की पूर्ति में सहायता करनेवाले तीनों व्यक्ति उसी के राज्य के नागरिक थे। तीनों में से यदि एक व्यक्ति भी उसकी सहायता नहीं करता तो वह राज्य पाने में सफल नहीं होता । यानी उसके लिए तीनों व्यक्तियों की सहायता का महत्व एक समान था । फिर भी, उसने तीनों के सम्मान में, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने में भेद-भाव क्यों किया?

''गुरु को उसने सिर्फ़ स्वर्ण मुद्राएँ दीं । लेकिन सुकेतु को राज सम्मान देने के साथ-साथ स्वजन के समान प्रेम दिया । और वीर को दोनों में से कुछ भी नहीं मिला । बल्कि उसे अपमानित कर निम्न स्तर का कार्य दिया गया । उन तीनों नागरिकों के प्रति मलयध्वज के व्यवहार में इस भेदभाव का क्या कारण है? क्या उसने ऐसा

अज्ञान के कारण किया या जानबूझ कर पक्षपात किया अथवा इसके पीछे राजधर्म का कोई सूत्र छिपा है? और यदि मलयध्वज के स्थान पर तुम होते तो उन तीनों के साथ कैसा -कैसा बरताव करते?

''यदि तुमने इन प्रश्नों के यथोचित उत्तर दिये तो स्वर्ण सिंहासन की दूसरी सीढ़ी पर आरोहण करने के अधिकारी बन जाओगे, अन्यथा तुम्हारे सामने ही यह स्वर्ण-सिंहासन अदृश्य हो जायेगा ।''

विजयदत्त ने उत्तर देते हुए कहा, - ''हे धर्म की अधिष्ठात्री देवी, उन तीन नागरिकों के प्रति मलयध्वज के व्यवहार में भिन्नता का कारण उसका अज्ञान या पक्षपात नहीं, बल्कि उसमें राजधर्म का गूढ़ सूत्र छिपा है । राजधर्म का ज्ञाता भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के साथ उसकी चेतना और बुद्धि के स्तर के अनुसार व्यवहार करता है । तीनों नागरिकों में स्तर भेद के कारण ही उसने तीनों का स्वागत - सत्कार अलग-अलग ढंग से किया ।

''वीर का स्तर अधम है । वह राजद्रोही, नीच और कुटिल है । वह मजबूर होने पर राजकुमार को सहायता देने का वचन देता है । ऐसे लोग दण्ड के अधिकारी हैं । लेकिन मलयध्वज उसके उपकार को नजर अन्दाज करना नहीं चाहता चाहे उसने मजबूरी से ही उसकी सहायता क्यों न की हो । इसीलिए उसे प्राणदण्ड से मुक्त कर देता है । प्राणदान हीं उसके लिए पर्याप्त है ।

''गुरु भी पहरेदार है, लेकिन उसमें कृतज्ञता है, राजभक्ति है । वह मध्यम स्तर का नागरिक है। वह हृदय से राजकुमार की सहायता करता है । यद्यपि वह दीन है, फिर भी राजकुमार का अनुचित धन नहीं लेता । ऐसे मानसिक स्तर के लोगों के लिए धन की भेंट बहुत महत्वपूर्ण होती है । ऐसे लोग इससे अधिक की कामना भी नहीं करते । इसलिए गुरु को उसने अनगिनत अशर्फियाँ देकर उसकी जीवन भर की दरिद्रता दूर कर दी । गुरु के मानसिक स्तर के अनुरूप यह सर्वोत्तम उपहार था । और वह इससे पूर्णतया संतुष्ट था ।

''सुकेतु उत्तम कोटि का नागरिक है । वह न केवल राजभवन सम्बन्धी ज्ञान रखता है, बल्कि उसमें राजभक्ति भी है । उसमें मातृभूमि के प्रति प्रेम है । उसे उचित-अनुचित का ज्ञान है । इसीलिए वह कन्दर्प के विश्वासघात को बहुत अधम कर्म मानता है । वह अपने राजा के लिए सब कुछ करने को तैयार है । यही कारण है कि

उसने मलयध्वज को शरण दी और उसकी सम्पूर्ण योजना को कार्यान्वित करने में मुख्य भूमिका का निर्वाह किया । उसने राजकुमार को स्वजन के समान ही अपने घर में रखा और उसकी हर संभव सहायता की । इसीलिए राजकुमार मलध्वज ने भी राजा हो जाने पर उसे और उसकी पत्नी को अपने सम्बन्धी के समान ही राज सम्मान दिया । धन से ऊँची श्रेणी की यह राजकीय प्रतिष्ठा विशिष्ट नागरिकों को ही सुलभ होती है । यह सम्मान सुकेतु के मानसिक स्तर के सर्वथा उपयुक्त था और वह इससे पूर्णतया सन्तुष्ट था ।

''मेरी दृष्टि में मलयध्वज का तीनों के प्रति अलग-अलग व्यवहार उनकी योग्यता और स्तर के अनुरूप होने के कारण सर्वथा उचित था । एक उत्तम कोटि के राजा को ऐसा ही करना चाहिये । राजधर्म का यही आदर्श रूप है । मलयध्वज के स्थान पर यदि मैं होता तो ऐसा ही व्यवहार करता ।''

विजयदत्त का उत्तर सुन कर दूसरी सालभंजिका ने प्रसन्न होकर कहा, - ''बधाई युवराज ! तुम्हारा उत्तर आदर्श राजा के धर्म सूत्र के अनुरूप है । अब तुम दूसरी सीढ़ी पर आरोहण के योग्य हो । तुम्हारा स्वागत है ।''

साल भंजिका द्वारा विजयदत्त का स्वागत होते देख सभाभवन तालियों की आवाज से गूंज उठा । मंगल वाद्यों के स्वर से चारों ओर आनन्द की लहर दौड़ गई । विजयदत्त ने प्रसन्न मुद्रा में दूसरी सीढ़ी पर पाँव रखे ।

तब तीसरी और अंतिम साल भंजिका ने

मुस्कुराते हुए कहा, - ''युवराज विजयदत्त ! न्याय की देवी के रूप में तुम मेरा परिचय जान ही चुके हो । मैं तुम्हें न्यायवर्धन नाम के एक राजा की कहानी सुनाऊँगी । श्रद्धापूर्वक ध्यान से सुनो ।''

न्याय वर्धन सुभद्रा देश का शासक था । वह अपने आदर्श न्याय के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था । और इसी कारण अपने राज्य में प्रजा का बहुत प्रिय था । उसके न्याय में कहीं पक्षपात या असत्य का आभास तक नहीं मिलता । इसी आदर्श न्याय के कारण उसका नाम न्याय वर्धन पड़ गया । वैसे उसका वास्तविक नाम बलवर्धन था ।

सुभद्रा देश का पड़ोसी राजा भौम्य बलवर्धन का घनिष्ठ मित्र था । जब भौम्य का युवराज

कुमारसेतु युवा हो गया तब एक दिन राजा भौम्य ने उससे कहा, - ''पुत्र ! मैं वृद्ध हो गया हूँ । चाहता हूँ तुम्हारा राज्याभिषेक कर दूँ । लेकिन राजा बनने से पहले राजा के मुख्य धर्म न्याय का यथोचित ज्ञान आवश्यक है । पड़ोसी राजा न्याय बर्धन मेरे मित्र हैं और आदर्श न्याय के लिए प्रसिद्ध हैं। अच्छा होगा यदि कुछ दिनों के लिए शिष्य के रूप में उनके साथ रह कर न्याय धर्म का ज्ञान प्राप्त करो । यह तुम्हारे लिए बहुत हितकर सिद्ध होगा ।''

पिता के आदेशानुसार कुमार सेतु सुभद्रा देश जाकर राजा न्यायवर्धन से मिला । राजा ने उसे पुत्रवत प्यार दिया और कहा, - ''न्याय के विषय में मुझे जो भी ज्ञात है, मैं बता दूँगा । न्याय-व्यवस्था एक विशाल परिवार के समान है। राजा उस परिवार का प्रमुख है । जिस प्रकार परिवार में बच्चों के बीच झगड़े होते रहते हैं, वैसे ही राज्य भर में प्रजा के बीच परस्पर मतभेद होते रहते हैं । यदि उनका निपटारा आपस में हो जाये तो अच्छा होता है । अन्यथा उनके मतभेद के निर्णय का दायित्व प्रमुख पर आ जाता है । राज्य के झगड़ों का निपटारा करने के लिए न्यायाधीश होते हैं । यदि उनसे यह कार्य नहीं होता तो उस समस्या को राजा के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है । राजा का यह कर्तव्य होता है कि वह तथ्य की गहराई में जाये और सत्य का पता लगाये और तदनुसार न्याय करे । सच्चा न्याय देश की आंतरिक सुख-शांति के लिए आवश्यक है । इससे राजा प्रजा के प्रेम और आदर का पात्र बनता है । यदि प्रजा का पूर्ण समर्थन प्राप्त हो तो उसकी शक्ति हजार अक्षौहिणी सेना के समान हो जाती है ।''

इस प्रकार राजा न्यायवर्धन ने कुमार सेतु को न्याय विषय पर बहुत बातें बतायीं और दूसरे दिन राजसभा में उपस्थित रह कर न्याय-विचार की प्रक्रिया को श्रद्धा और ध्यान से देखने और सुनने के लिए कहा ।

दूसरे दिन कुमारसेतु न्यायवर्धन के साथ बैठकर राज सभा में होनेवाली न्याय प्रक्रिया को ध्यान से देखने लगा ।

उस दिन न्याय-निर्णय के लिए तीन व्यक्ति आये थे । उनमें से पहला फरियादी एक साधारण किसान था जिसका नाम स्वामी था । उसका प्रतिवादी था चन्द्र ।

राजा का आदेश पाकर स्वामी ने फरियाद

करते हुए कहा, - ''महाराज ! मेरा प्रतिवादी चन्द्र बचपन से ही मेरा मित्र है । जब हम दोनों युवा हो गये तो हम दोनों ने अपनी मित्रता को स्थायी बनाये रखने के लिए विवाह से पूर्व ही आपस में समधी बनने का निर्णय किया । मेरी शादी पहले हो गई और कालक्रम में एक पुत्र पैदा हुआ । मैंने चन्द्र से खुश होकर कहा, - ''लो ! तुम्हारा दामाद पैदा हो गया ।'' वह भी बहुत खुश हुआ । उसके बाद चन्द्र की शादी हुई और उसके घर एक पुत्री पैदा हुई । मैं भी अपनी पुत्रवधू के पैदा होने पर बहुत खुश था । दोनों बच्चे जब कुछ बड़े हुए तो वे भी आपस में मित्र बन गये । हम दोनों ने उनके विवाह का रिश्ता पक्का कर दिया । दोनों परिवारों के वयोवृद्ध जनों ने भी अपनी स्वीकृति दे दी ।

''संयोग की बात ! उसी दिन से उसके दिन फिर गये । उसने जो भी चीज़ छू दी, सोना बन गई । दिनोंदिन उसकी सम्पत्ति बढ़ती गई । वह कुछ वर्षों में गाँव का एक बड़ा किसान बन गया ।

''लेकिन तभी से मेरे ऊपर दुर्भाग्य की छाया मंडराने लगी । मेरी आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे खराब होती गई । मेरा परिश्रम व्यर्थ चला जाता। मैं जितनी मेहनत करता, उतना फल नहीं मिलता। मेरे पाँच बच्चे और हुए । परिवार बढ़ता गया, पर आमदनी और घटती गई । नतीजा यह हुआ कि जो भी थोड़ी-बहुत ज़मीन थी, बेचना पड़ गया ।

''मेरी इस दुरावस्था को देख कर चन्द्र और उसकी पत्नी हमारे परिवार से दूर-दूर रहने लगे। बल्कि उन्होंने एक दिन यह भी कह दिया कि अपनी बेटी की शादी तुम्हारे बेटे से हम कभी नहीं करेंगे ।

''चंद्र की धन-संपत्ति को देखते हुए हमारे कुल के प्रमुख लोग भी उसी का समर्थन कर रहे हैं । उनका भी कहना है कि बचपन की बातों का कोई मूल्य नहीं होता। उन्हें गिनती में लेना नहीं चाहिये । महाराज, पूरा विषय मैंने आपको बता दिया । आप उसे समझाइये कि वचन से मुकर जाना ग़लत बात है । लक्ष्मी को हमारी बहू बनाने के लिए उसे आदेश दीजिये ।'' उसकी बातों में कभी सरलता थी तो कभी व्यंग्य । पर अंत में वह जोश भरे स्वर में कहता रहा ।

महाराज ने चंद्र की ओर देखते हुए उससे पूछा, ''चंद्र, तुम्हें क्या कहना है?'' - **क्रमशः**

भारत

एक महान सभ्यता की झाँकियाँ :
युग-युग में सत्य के लिए इसकी गौरवमयी खोज

7. अज्ञात कुल का ऋषि

गर्मी की छुट्टियाँ आरंभ हो चुकी थीं । चमेली और संदीप के पास ग्रैंड पा की कहानियाँ सुनने के लिए समय ही समय था। चाहे ग्रैंड पा डाइनिंग टेबल पर हों, या ड्राइंग रूम में; चाहे नदी किनारे घूम रहे हों या लाइब्रेरी में - बच्चे उनसे इतिहास के प्रसंग, आख्यान, किस्से सुनने का कोई भी अवसर हाथ से जाने नहीं देते।

''ग्रैंड पा, दण्डकारण्य की कहानी सचमुच बड़ी मोहक थी, और उस महा अरण्य में समय-समय पर घटित होनेवाली घटनाएँ भी कम चित्ताकर्षक नहीं थीं।'' चमेली ने कहा।

''और प्राचीन भारत में बन शिक्षा के केन्द्र भी होते थे; मैं ठीक कह रहा हूँ न ग्रैंड पा !'' संदीप बोला।

''ठीक । बनों में गुरु के आसपास गुरुकुलों अथवा समुदायों की स्थापना होती चली गई, क्योंकि ऋषिगण ही गुरु हुआ करते थे जो जंगलों में रहना पसन्द करते थे।'' ग्रैंड पा ने कहा। ''निस्सन्देह सदा आदर्श स्थानों पर ही, - नदियों के तीर पर या रम्य घाटियों में।''

''सुन्दर !'' संदीप ने अपना मनोभाव व्यक्त किया।

'ग्रैंड पा, भइया 'सुन्दर' तो कहता है, लेकिन किसी गुरुकुल में यह एक दिन के लिए भी नहीं रह पाता, क्योंकि उनके पास बैड मिंटन नहीं था।'' चमेली ने टिप्पणी की।

''कोई बात नहीं। लेकिन मैं अपने दोस्तों के साथ आँख-मिचौनी खूब खेलता। शहर में ऐसे खेल खेलने का मौका ही कहाँ मिलता है!'' संदीप ने कहा।

''सच है कि उनके पास बैडमिंटन, टेनिस या क्रिकेट नहीं था, लेकिन शारीरिक व्यायाम और खेल की उत्कृष्ट पद्धतियाँ थीं। जैसे-कुश्ती,

विश्वावसु

ो गाथा

दौड़, तरण, वृक्षारोहण तथा प्रचुर मात्रा में खेल। कबड्डी और हा-डू-डू उसी परम्परा के खेल आज भी हैं जिनमें श्वास पर नियंत्रण और शरीर की नमनीयता की बहुत आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, क्षत्रिय परिवार के बालकों को धनुष विद्या, असिक्रीड़ा, लाठी भांजना भी सीखना पड़ता था।'' ग्रैंड पा ने कहा।

''हाँ, याद आया, उस समय वर्ण-व्यवस्था क्या बहुत कठोर थी, ग्रैंड पा?'' संदीप ने पूछा।

''वर्ण व्यवस्था के प्रारम्भ का हमारे यहाँ कोई विवरण नहीं है। लेकिन एक चीज़ निश्चित है। व्यक्ति के स्वभाव और पेशे में सामंजस्य लाने के लिए ही इसका आरंभ किया गया। कुछ ऐसे लोग थे जो साहसिक कार्य पसन्द करते थे। उनके लिए क्षत्रिय का पेशा था। कुछ लोगों को व्यापार अच्छा लगता था। वे वैश्य कहलाते थे। कुछ कृषि करना तथा तरह-तरह की सेवाएँ देना चाहते थे। ये शूद्र कहलाते थे। जो शास्त्रों के अध्ययन और ध्यान में रत रहते थे, वे ब्राह्मण कहे जाते थे। सभी कर्मों को समान महत्व दिया जाता था। हमारा सामान्य ज्ञान कहता है कि आरंभ में यह वर्गीकरण वंशानुगत नहीं रहा होगा।'' ग्रैंड पा यह कह कर रुक गये।

''तब यह वंशानुगत कैसे हो गया?'' संदीप ने जिज्ञासा की।

''व्यावहारिक कारणों से । शास्त्रों के
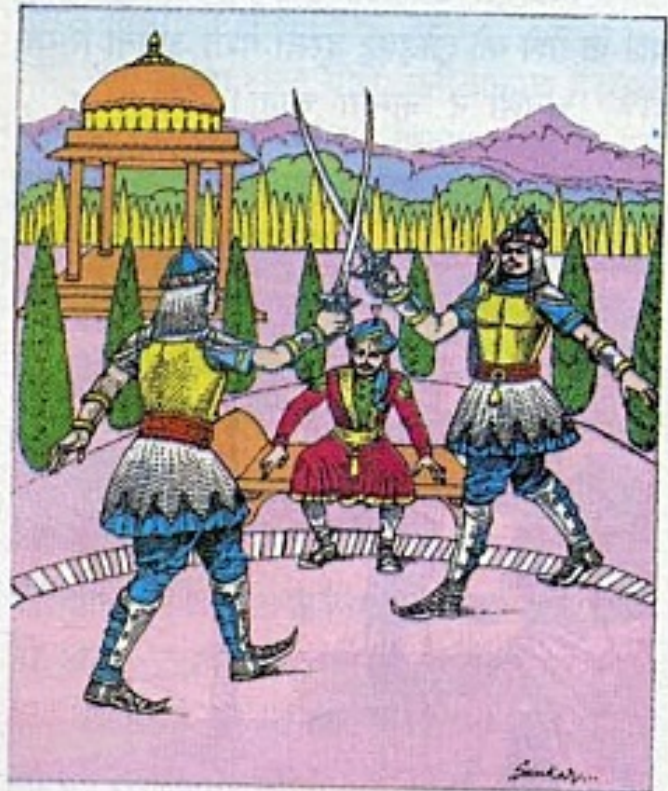
अध्ययन और कर्मकांडों के वातावरण में रहने के कारण ब्राह्मण का बेटा अनायास ही इनमें रुचि लेने लगा। क्षत्रिय का पुत्र अपने पिता को अस्त्र-शस्त्र चलाते देख कर उससे आकर्षित हो गया और शस्त्र विद्या सीखने लगा। उसके पिता को अपने बेटे को सिखाना अच्छा लगता होगा। यही बात अन्य दो पेशों के साथ भी हुई होगी। तब तक इस व्यवस्था में कोई दोष नहीं था, क्योंकि एक शाखा से दूसरी शाखा में स्थानान्तरण हो सकता था। त्रासदी तब आरम्भ हुई जब श्रेष्ठता और हीनता की भावना से परम्परा ग्रस्त हो गई। दोष मानव स्वभाव में है, उसके अहं भाव में है। आशा करें कि एक दिन

आयेगा जब हम सब अपने अहंकार भाव से ऊपर उठ सकेंगे।''

''क्या ऐसे उदाहरण हैं कि किसी ने अपने वर्ण के पेशे को छोड़कर दूसरा पेशा अपना लिया हो?'' चमेली ने जानना चाहा।

''इस आदर्श के वंशानुगत पद्धति में बदल जानेके पूर्व ऐसे हजारों उदाहरण अवश्य होंगे। जब यह एक पद्धति बन गई तब भी बहुत दिनों तक इसमें नमनीयता बनी रही। राजा और प्रजा दोनों में समान रूप से सम्मानित ऋषि शिष्यों की प्रकृति को समझ कर यह निर्णय लेते थे कि किस कर्म या पेशे के लिए अमुक शिष्य उपयुक्त है। ऐसे दृष्टान्त बहुत रहे होंगे। लेकिन एक का लिखित विवरण उपलब्ध है, क्योंकि वह बाद में स्वयं एक प्रख्यात ऋषि बना।'' ग्रैंड पा ने कहा।

''कृपया उसके विषय में बताइये, ग्रैंड पा ।'' चमेली और संदीप दोनों ने उत्सुकता दिखाई।

ग्रैंड पा ने तब उसकी कथा सुनाई :

जंगल के उपान्त में एक स्त्री अपने एक मात्र बच्चे के साथ रहती थी। उसकी कुटिया के निकट से ही एक नदी बहती थी। नदी के पार किनारे पर ही एक गुरुकुल था। इसके प्रधान एक महान ऋषि गौतम थे।

हर रोज वह बालक नदी में स्नान करते समय दूसरे किनारे पर अपने समवयस्क बालकों को भी स्नान करते हुए देखता था। गुरु ने उन्हें गायत्री मंत्र का उच्चार करना और सूर्य नमस्कार करना सिखाया था। बालक के मन में यह इच्छा उठती, - ''क्या वह भी उनके साथ रह कर वैसा नहीं कर सकता?''

एक दिन उसने अपनी यह इच्छा माँ को बताई। ''क्यों नहीं गुरु से मिल कर अपना शिष्य बनाने के लिए उनसे प्रार्थना करते?'' माँ ने उसे सुझाव दिया।

दूसरे दिन बालकने तैर कर नदी पार की और गुरु को अपनी इच्छा बताई। गुरु उसकी जिज्ञासा जान कर बहुत प्रभावित हुए होंगे। किन्तु बालक की पृष्ठभूमि जानना आवश्यक था, ताकि उसके अनुरूप और योग्य पाठ्यक्रम निर्धारित किया जा सके। इसलिए उन्होंने पूछा - ''तुम्हारी जाति क्या है?''

''मुझे ज्ञात नहीं है।'' बालक ने हकलाते हुए कहा।

"अपनी माँ से पूछ कर बताना।" ऋषि ने कहा।

दूसरे दिन बालक ने ऋषि को बताया कि मेरी माँ को मेरे पिता की जाति ज्ञात नहीं है।

"कोई बात नहीं । किन्तु अपने पिता का नाम बता दो।" ऋषि ने पूछा।

"मुझे ज्ञात नहीं है, गुरुवर ।"

"माँ से पूछ कर आओ।" ऋषि ने कहा।

बालक अगले दिन गुरु के पास फिर आया किन्तु वह बहुत निराश दिखाई पड़ा। उसने कहा, - "गुरुवर, मेरी माँ भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न घरों में नौकरानी की तरह काम करती थी। एक बार किसी घरेलू नौकर के साथ उसका विवाह हो गया, किन्तु उसका उपनाम ज्ञात होने से पूर्व ही वह महामारी में काल-कवलित हो गया। परिवार के भी विभाजित होने से वह अकेली रह गई। मेरे जन्म के बाद से वह जंगल के निकट रहती है और जंगली लकड़ियाँ और फलों को बेच कर गुजारा करती है।"

"मेरे बच्चे, तुम्हारी जाति स्पष्ट है। तुम ब्राह्मण हो।" ऋषि ने कहा और उसे अपना शिष्य स्वीकार कर लिया।

"ऋषिवर, आपने कैसे जाना कि वह ब्राह्मण है?" किसी ने पूछा।

"जो सर्वदा सत्य बोले, वही ब्राह्मण है। इस बालक और इसकी माँ को मिथ्या कहने के कई अवसर मिले। लेकिन इनमें सत्य वचन बोलने का साहस और सचाई है।" ऋषि ने समझाया।

हम नहीं जानते कि इसकी माँ इसे किस नाम से बुलाती थी, लेकिन गुरु ने इसे 'सत्यकाम' से सम्बोधित किया - जो सत्य से प्रेम करे। सत्यकाम की माँ का नाम जाबाली था। इसलिए उसे सत्यकाम जाबाला के नाम से सम्बोधित किया गया जिससे अन्य सत्यकामों से अलग उसकी पहचान हो सके।

"ऋषियों का समाज पर कितना बड़ा प्रभाव था!" संदीप ने कहा।

"और यह भी जान लो कि जो ऋषि बन जाता है, वह जाति-पांति से ऊपर उठ जाता है।" ग्रैंड पा ने कहा।
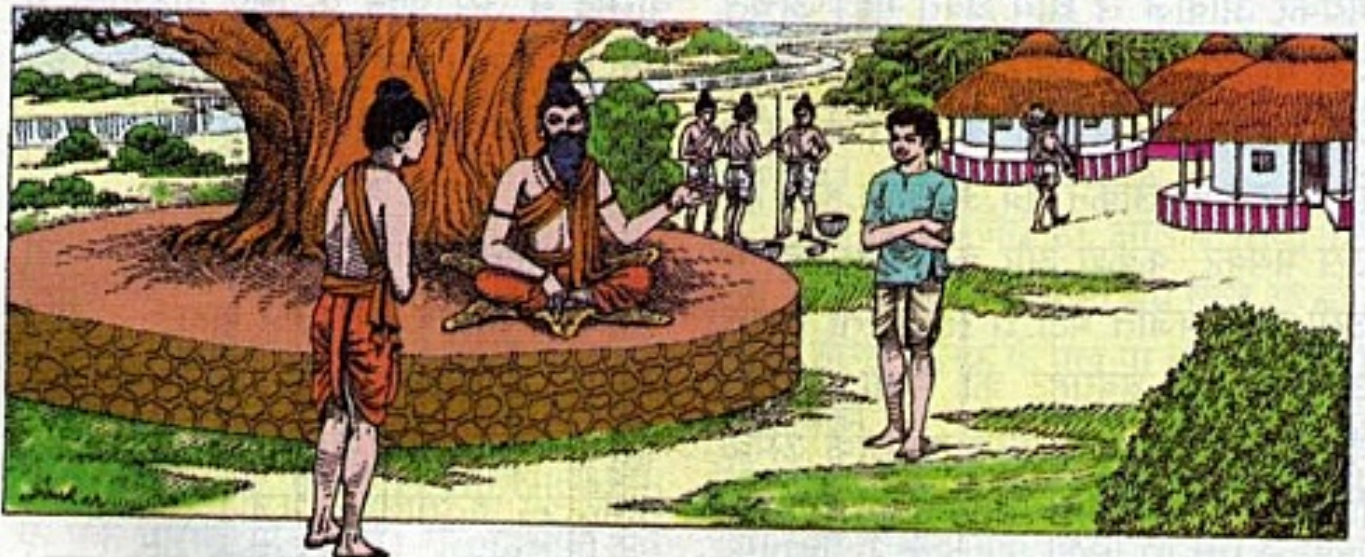
कर्ण भेदी गायक

भीम तरंगिणी राज्य में एक किसान दम्पति रहता था। पति का नाम था वीरभद्र और पत्नी का स्वर्ण लक्ष्मी। विवाह के बहुत वर्षों के बाद भी उनके कोई संतान नहीं हुई। स्वर्ण लक्ष्मी के बहुत अनुष्ठान, व्रत, पूजा-पाठ, दान इत्यादि करने के बाद अन्ततः उसे एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई।

अति मनोहर लगनेवाला बालक पैदा होते ही मेघ-गर्जन की तरह रोने लगा। उसकी भयंकर आवाज से धाय घबरा गई। अचेत पड़ी माँ इस भीषण ध्वनि को सुन कर चौंक पड़ी। पहले पता न लगा कि वह गर्जन कहाँ से आ रहा है। लेकिन जब उसे ज्ञात हुआ कि उस भयंकर, कर्कश और कर्ण भेदी स्वर में उसी का नवजात बेटा रो रहा है तो उसके आश्चर्य और घबराहट की सीमा न रही। वीरभद्र को जब यह मालूम हुआ कि उसके शिशु की आवाज अस्वाभाविक रूप से भारी, भद्दा और असाधारण रूप से विकृत है, तो वह पुत्र पाने की प्रसन्नता की जगह चिंता में डूब गया। लेकिन अपनी चिंता को छिपाते हुए पत्नी को सान्त्वना दी।

उन्होंने बच्चे का नाम रखा - राजशेखर। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गई, उसकी आवाज और भी भद्दी और कर्णफटु होती गई। जब वह किसी बात पर रूठ कर चीखने लगता तो बिजली कड़कने की - सी आवाज आती।

जब राजशेखर थोड़ा और बड़ा हुआ तो वीरभद्र ने उसे पढ़ने के लिए पाठशाला में भर्ती कर दिया। वहाँ उसकी आवाज सुन कर कुछ बच्चे बीमार पड़ गये और कुछ उसे दूर से ही देखकर भय से काँपने लगे।

इस घटना के बाद पाठशाला के गुरु जी ने वीरभद्र के पाँव पकड़ कर कहा, - "यदि राजशेखर पाठशाला आता रहा तो मेरी एक मात्र जीविका मारी जायेगी। इसलिए दया करके उसे पाठशाला न भेजो।"

अब वीरभद्र और चिन्तित रहने लगा।

भुवनगिरि

उसने लाचार होकर राजशेखर को पाठशाला भेजना बन्द कर दिया। लेकिन उसके लिए आगे क्या किया जाये, यही चिंता उसे खाये जा रही थी।

तभी उसके गाँव में शार्दूलपाद नाम का एक संन्यासी आया। गाँव भर में यह शोर था कि वह बहुत चमत्कारी महात्मा है। वीरभद्र अपने पुत्र को उसके पास ले गया और आदर के साथ विनयपूर्वक बोला, - ''यह बालक राजशेखर मेरा पुत्र है। भगवान ने इसे बहुत भयंकर और कर्णकटु स्वर दिया है। पाठशाला में इसकी भयंकर आवाज से विद्यार्थी काँपने लगते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। गुरु जी इसे पढ़ाने के लिए मना करते हैं। दया करके कोई समाधान बताइये।''

संन्यासी शार्दूलपाद ने बालक की हस्तरेखाओं को ध्यान से देख कर कहा, - ''इसके बीसवें वर्ष में इसके भाग्य का सितारा चमकेगा और इसके गायन से एक महान कार्य सम्पन्न होगा। इस पर लक्ष्मी की कृपा बरसेगी।''

वीरभद्र को संन्यासी की भविष्यवाणी पर सहसा विश्वास नहीं हुआ । उसने सोचा कि जिसकी आवाज इतनी अप्रिय है, वह महान गायक कैसे बन जायेगा! फिर भी संन्यासी की भविष्यवाणी में श्रद्धा रख कर उसने राजशेखर को संगीत की शिक्षा देने का निर्णय किया।

उसके पड़ोसी गाँव में गुरु अमृतपाणि नाम के एक प्रसिद्ध गायक थे। उसने अपने पुत्र को उनके पास ले जाकर उनसे विनती की, - ''मेरे बच्चे को संगीत का बड़ा शौक है। कृपया इसे अपना शिष्य बना कर गायन की शिक्षा दीजिये। प्रतिफल में आप के आदेशानुसार सेवा के लिए तैयार हूँ।''
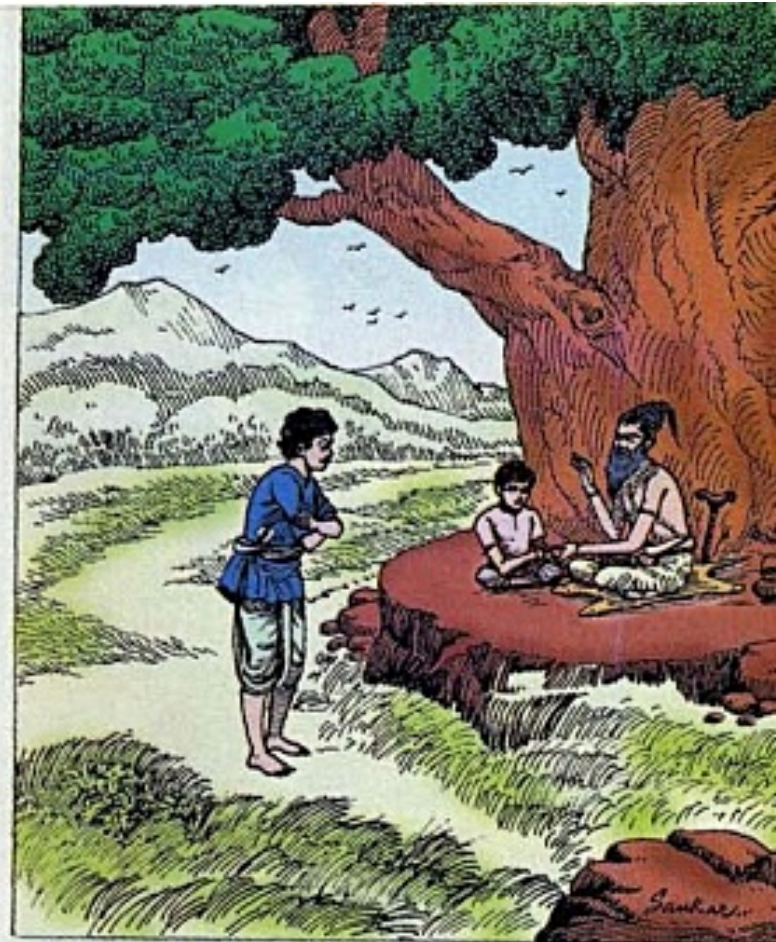
गुरु अमृतपाणि ने एक भजन की एक पंक्ति गाकर सुनायी। और राजशेखर से कहा कि इसे जैसे मैंने गाया है, वैसे ही गाकर सुनाओ।

राजशेखर ने जैसे ही आलाप लिया कि गुरु जी को ऐसा लगा मानो मेघ गरज रहे हों। उसने तुरन्त बालक के मुख पर हाथ रख दिया और कहा, - ''बेटे, तुम बच्चे हो, नहीं तो पाँव पड़ जाता। मैं कमजोर दिल का हूँ। यदि तुमने गाना बन्द नहीं किया तो मेरी धड़कन बन्द हो जायेगी।'' इतना कह कर अमृतपाणि
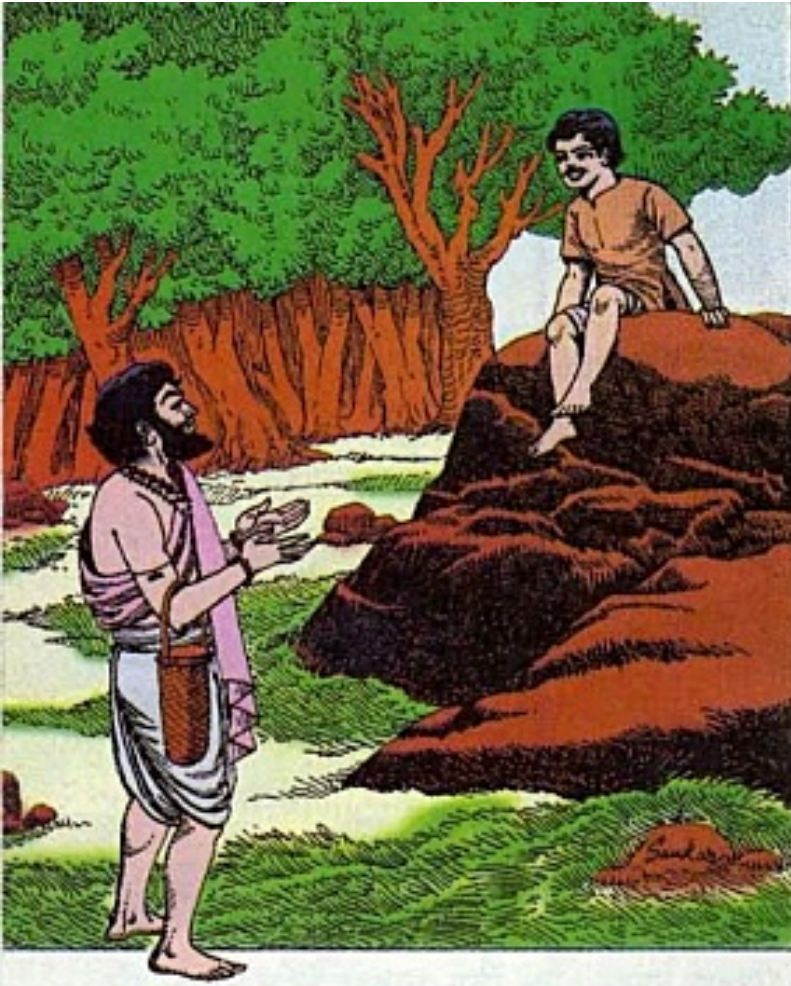
रुआँसा हो गये।

लेकिन राजशेखर नाराज होकर बोला, - "बीच में गाना बन्द करने की मेरी आदत नहीं है।" जब उसने गाना बन्द किया तब गुरु जी ने उससे कहा, - "बेटे, तुम्हें, सच पूछो तो, गाना सीखने की आवश्यकता नहीं है। तुम जन्मजात गायक हो। जिस प्रकार कर्ण कवच-कुंडल के साथ पैदा हुआ था, उसी प्रकार तुम भी गाने की प्रतिभा के साथ पैदा हुए हो।"

वीरभद्र गुरु अमृतपाणि का व्यंग्य समझ गया, लेकिन अबोध राजशेखर ने समझा कि गुरु जी उसके गायन की प्रशंसा कर रहे हैं।

घर लौटने के बाद वीरभद्र ने कोई और उपाय न देख कर राजशेखर से कहा, - "बेटे, तुममें गाने की प्रतिभा है। लेकिन तुम्हारी प्रतिभा से गाँव के लोग तुमसे ईर्ष्या करेंगे। इसलिए गाँव से बाहर जाकर निर्जन स्थान में अपना अभ्यास जारी रखना।"

राजशेखर को पिता की सलाह अच्छी लगी। वह गाँव के बाहर एक पहाड़ी पर बैठ कर गाने लगा। गाँव के पुजारी निर्मल पांडे जड़ी-बूटी लाने के लिए पहाड़ी पर गये थे। राजशेखर की आवाज को मेघ गर्जन समझ कर वे आकाश की ओर देखने लगे। इधर-उधर देखने पर उसे राजशेखर दिखाई पड़ा। उसकी आवाज सुनकर वह चकित और भयभीत था। कुछ सोच कर उसने राजशेखर से कहा, - "दूर से तुम्हारा गाना आकाश में गन्धर्व गान की तरह सुनाई पड़ा। क्यों नहीं तुम राजा से मिल कर उन्हें अपना गन्धर्व गान सुनाते। वे अवश्य तुम्हारा सम्मान करेंगे।"

भोलाभाला राजशेखर पुजारी की बातों का विश्वास कर किसी को बताये बिना सीधा राजा से जाकर मिला।

उस समय उस देश का राजा सुप्रभात संकट में था। उसे गुप्तचरों से मालूम हुआ कि उसका पड़ोसी राजा मार्तण्ड सेना के साथ उसके देश पर आक्रमण करने के लिए निकल चुका है। लेकिन उसका सेनापति ज्वर से पीड़ित शैय्या पर लेटा था। राजा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो चिंता में बैठा हुआ था। तभी एक सैनिक ने सूचना दी कि राजशेखर नाम का गायक आप का मिलना चाहता है और अपने गाने से आप को मनोरंजन करना

चाहता है। क्या उसे आने दें?

राजा ने सिर हिला कर उसे भेजने को कहा। राजशेखर राजा के समक्ष आते ही गाने लगा। उसका स्वर सुन कर राजा घबरा गया। उसे लगा मानों उसके देश पर शत्रु की हजारों तोपें एक साथ गोले बरसा रही हों। महल की रानियों ने यह आवाज सुन कर घबराहट में समझा कि भीम तरंगिणी नदी की बाढ़ का पानी उमड़ता हुआ महल की ओर आ रहा है।

राजा ने क्रोधित होकर पहले सोचा कि उसकी जीभ ही कटवा दें ताकि सदा के लिए उसकी आवाज बन्द हो जाये। किन्तु बाद में याद आया कि राज्य की दक्षिण दिशा के अरण्य में एक राक्षस घूम रहा है। इस गायक को उसी अरण्य में छोड़ दें तो राक्षस उसे अपने आप ही निगल जायेगा। उसने तुरन्त सैनिकों को आदेश दिया कि इस कर्ण भेदी गायक को राक्षस के अरण्य में छोड़ आओ।

सैनिक राजा के आदेश के अनुसार राजशेखर को राक्षस के अरण्य में छोड़ आये। अब तक के अनुभव से उसे यह ज्ञात हो गया कि उसकी आवाज इतनी भयंकर है कि सभी डर जाते हैं। उसे अपनी आवाज पर काफी भरोसा हो गया। उसे विश्वास हो गया कि राक्षस भी उसकी आवाज के सामने टिक नहीं पायेगा।

इतने में सामने से वृक्षों की शाखाओं को गाजर-मूली की तरह तोड़ता हुआ, हाथ में

चट्टान की गदा लिये मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ, राक्षस उसी की ओर आता दिखाई पड़ा। राजशेखर को देखते ही वह कहने लगा, - ''कितने दिनों के बाद आज एक जीवित मानुस पर नजर पड़ी है। हा हा।'' और हँसता हुआ वह लम्बे डग से उसकी ओर बढ़ा।

राजशेखर पहले तो उसका विशाल शरीर और उसके हाथ में चट्टान देख कर डर गया। फिर साहस बटोर कर गंभीर गर्जन करता हुआ बोला, - ''अहा ! विधि का विधान देखो। इस अधम राक्षस की मौत मेरे ही स्वर से लिखी हुई है।'' इतना कह कर वह गला फाड़-फाड़ कर गाने लगा।

राजशेखर का गाना सुनते ही राक्षस के

बढ़ते हुए पाँव रुक गये। उसके कदम डगमगाने लगे और वह गिर पड़ा। पुनः उठते हुए वह चिल्लाया,- ''बन्द करो यह गाना। मेरे कान फटे जा रहे हैं।''

इससे राजशेखर समझ गया कि अब राक्षस से खतरा नहीं है। बल्कि राक्षस को सताने के लिए वह और भी जोर से गाने लगा। फिर रुक कर उसने कहा, - ''मैं कर्ण भेदक गायक हूँ। जब तक मेरा पूरा गाना नहीं सुनोगे, मैं गाना बंद नहीं करूँगा।'' इतना कह कर वह पुनः गाने लगा।

राक्षस से उसका कर्ण भेदी गायन जब सुना नहीं गया तो वह जंगल की ओर चिल्लाता हुआ भागा। राजशेखर गाता हुआ उसका पीछा करने लगा।

उसी समय शत्रु राजा मार्तण्ड सेना सहित भीम तरंगिणी राज्य पर आक्रमण करने के लिए उस मार्ग से आ रहा था। पर्वताकार राक्षस को अपनी ओर भाग कर आते हुए देख कर सैनिक भय से काँपने लगे। मार्तण्ड भी यह दृश्य देख कर घबरा गया। उसने सोचा कि इस राज्य का एक साधारण नागरिक बिना हथियार के एक विकराल राक्षस का पीछा कर रहा है, तो यहाँ के सैनिक कितने बहादुर होंगे। उसने तुरन्त अपने घोड़े को वापस मोड़ लिया और अपनी सेना को भी वापस लौट जाने की आज्ञा दी।

इधर राक्षस को मार्ग में जितने सैनिक मिले उन्हें अपनी चट्टान से मारता हुआ वह आगे भागता जा रहा था। इससे मार्तण्ड की सेना में हाहाकार मच गया। राक्षस अपने को बचाने के लिए विंध्य पर्वत की एक गुफा में छिप गया।

गुप्तचरों से राजा को जब यह खबर मिली तो यह समझने में उसे देर नहीं लगी कि राक्षस और शत्रु की बलाएँ एक साथ ही राजशेखर की भयानक आवाज के कारण ही टल गईं। इसलिए उसी दिन राजा ने राजशेखर को राजकीय सम्मान के साथ प्रचुर धन-दौलत की भेंट दी। साथ ही, उससे कभी न गाने की शपथ दिला कर उसे आस्थान में नौकरी भी दे दी।

कावेरी के तटों की यात्रा का अगला मुख्य पड़ाव कुंभकोणम आने से पहले ही कंजनुर और तिरुविसनल्लूर दो नगर हैं. कंजनुर कभी हथकरघा से बनी साड़ियों के लिए बहुत प्रसिद्ध था. तिरुविसनल्लूर प्रसिद्ध व्यंग्यकार, विकटम रामास्वामी शास्त्रीयार और मशहूर समाजसुधारक तथा भक्त श्रीधर अय्या, जिन्हें अय्यावल नामक सम्मान्नीय उपाधि से जाना जाता है, का निवास स्थान है. श्रीधर अय्या ने तिरुविसनल्लूर में अपना भक्तिपूर्ण और आध्यात्मिक जीवन बिताने के लिए मैसूर में मंत्रीपद का त्याग कर दिया था. उनकी करुणा और मानवता के किस्से पौराणिक कथाओं में स्थान पाते हैं.

कावेरी के किनारे – X

दक्षिण का बनारस

कहानी : जयंती महालिंगम

चित्रण : गौतम सेन

एक बार, अपनी मां के श्राद्ध-संस्कार के समय नदी के पास एक निर्धन हरिजन को देखा. वह भूख से सूखकर कांटा हो गया था और बहुत ही जर्जर और दुर्बल नजर आ रहा था. उसे देख कर अय्या का हृदय दया से भर आया. वे जल्दी वापस घर लौट आये और श्राद्ध के लिए पका हुआ भोजन उसे पहुंचा दिया. ब्राह्मण क्रोधित हो गये. उन्होंने संस्कार विधियां करने से इंकार कर दिया. अय्या चुपचाप खड़े होकर उन्हें जाते हुए देखते रहे. उसके बाद, दरबा घास की पत्तियों को उन्होंने ब्राह्मणों के स्थान पर रखा और स्वयं सारे संस्कार पूरे कर लिये.

कुंभकोणम को 'कावेरी की काशी' कहा जाता है. कावेरी के दक्षिणी किनारे पर स्थित यह शहर बहुत ही समृद्ध और उन्नत है. कावेरी की सहायक अरासलार भी यहीं आकर मिलती है. नवीं शताब्दी से कुंभकोणम कावेरी के कच्छ का धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक केंद्र है. यहां के रेशम और कपास उद्योग का बहुत महत्त्व है. इसी तरह कांसा ढालने, पीतल के बर्तन बनाने और सोने के आभूषणों के निर्माण में भी इसकी अपनी विशेषता है. यहां के कला विद्यालय ने कई उत्तम चित्रकारों और

आदि कुंभेश्वर मंदिर

ऐरावतीश्वर मंदिर

मूर्तिकारों को जन्म दिया है. सौराष्ट्र से आने वाले प्रवासियों ने इस नगर को 'जरी' की बुनाई का काम भेंट में दिया है. गुजराती व्यापारी बहुत बड़ी संख्या में यहां बस गये हैं.

यहां के सरकारी कला महाविद्यालय में कई विद्वान अध्ययन और अध्यापन करते आये हैं. इसलिए कुंभकोणम को दक्षिण भारत का क्रैंबिज भी कहा जाता है. यह मंदिरों का नगर है. यहां लगभग 60 मंदिर हैं. यहां के कुल-देवता हैं आदि कुंभेश्वर. इन्हीं के नाम पर नगर का नाम कुंभकोणम पड़ा है. इनका मंदिर नगर के बीचो-बीच स्थित है. लिंग और नगर के सृजन को लेकर एक पौराणिक कथा यहां प्रचलित है. महाप्रलय के कुछ पहले ही शिव ने ब्रह्मा को सभी जीवों के दिव्य बीज दिये और उनसे कहा कि इन्हें वे अमृत से भरे एक कुंभ में रखें. उन्हें निर्देश गया था कि बिल्वा पत्तियों के साथ इस कुंभ की पूजा करें और प्रलय आने पर मेरु पर्वत की चोटी पर छोड़ दें. लेकिन पानी के कारण वह कुंभ चोटी से बह गया और अंत में कुंभकोणम के निकट आकर रुक गया. शिव उस स्थान पर पहुंचे और बाण चलाकर उन्होंने कुंभ को तोड़ दिया. कुंभ की वस्तुएं विभिन्न स्थानों पर गिर गयीं. महामहम कुंड और पात्रामराइ कुलम (स्वर्ण कमलों का सरोवर) इन दो स्थानों में अमृत गिरा. शिव ने रेत में अमृत मिलाकर लिंग बनाया और अंत में उसी के साथ विलीन हो गये. चूंकि यह सृजन के पहले से अस्तित्व में है, इसे 'आदि' कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है 'सर्वप्रथम.'

आदि कुंभेश्वर कुंभकोणम का सबसे बड़ा मंदिर है. 9000 वर्ग मीटर के क्षेत्रफल में फैले इस मंदिर के तीन गोपुरम् हैं. इस मंदिर का इतिहास 7वीं शताब्दी से शुरू होता है, सम्बंदर और अप्पर के तेवरम (मंत्रों) में इसकी प्रशंसा की गयी है. 16वीं और 17वीं शताब्दी में विजयनगर के नायक शासकों ने यहां कई निर्माण करवाये. अच्यूतप्पा नायक के मंत्री गोविंद दीक्षितर ने महामहम कुंड के आसपास 16 मंडप, अन्य सरोवर, कुएं और घाट बनवाये. वह एक बहुत बड़ा विद्वान, दार्शनिक और मानवतावादी था. उसने बहुत-सी नि:स्वार्थ सेवाएं दीं. अय्यन नाम से प्रसिद्ध इस मंत्री को अय्यनकुलम (सरोवर), अय्यनथेरु (मार्ग) और अय्यनकडइ (बाजार) जैसे कई सार्वजनिक निर्माणों के कारण आज भी कोई भुला नहीं सकता.

कुंभकोणम का दूसरा महत्त्वपूर्ण मंदिर है – नवीं शताब्दी में चोल-युग का नागेश्वर मंदिर. यह मंदिर प्रारंभिक चोल-युग की मूर्तिकला और वास्तुकला का सुंदर उदाहरण है. मंदिर की दीवारों पर शिव और रामायण की

कथा-शृंखला के सुंदर एवं उत्कृष्ट पत्थर के नक्काशीदार चित्र उकेरे गये हैं.

महामहम कुंड

चोल साम्राज्य का एकमात्र विष्णु को समर्पित सुंदर मंदिर है – सारंगपाणि. यहां की मूर्तियां लेटी हुई हैं. मुख्य देवालय को एक सुंदर रथ के रूप में तराशा गया है. रथ के साथ उच्च कोटि के कुलांचे भरते हुए घोड़े, हाथी और पहिये बने हुए हैं. नायक राजाओं ने बाद में इसमें बारह-मंजिला गोपुरम् जोड़ दिया.

कुंभकोणम से 5 कि.मी. दूर दारासुरम में ऐरावतीश्वर नाम का एक और रथ-रूपी चोल मंदिर है. इस मंदिर को प्रायः पत्थरों में मूर्तिकार का सपना के रूप में वर्णित किया जाता है. इसका मुख्य भाग एक विशाल रथ का रूप लिये हुए है. इसे घोड़े खींच रहे हैं. यहां की चित्रकारी और मूर्तिकला के नमूने कला के समृद्ध खजाने हैं. मंदिर के सामने स्थित कुछ स्तंभों को यदि हल्का-सा धक्का दिया जाए तो इनमें से संगीत की धुन निकलती है. दारासुरम पलैयरै की पूर्व चोल राजधानी थी.

ऐरावतीश्वर मंदिर में उभरे हुए चित्र

कुंभकोणम का सबसे बड़ा महोत्सव है महामहम. यह महोत्सव उत्तर के कुंभ मेले की तरह बारह वर्षों के बाद होता है. लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि इस दिन भारत की सारी नदियों का पानी धरती के अंदर से बहता है और कावेरी के पानी से आकर मिलता है. उन विशेष पवित्र क्षणों में हजारों श्रद्धालु एक ही समय में महामहम कुंड में डुबकी लगाने के लिए उतर जाते हैं. मानवसमूह इतना घना होता है कि कुंड का जरा-सा भी पानी दिखायी नहीं देता. ऐसा पिछला महामहम महोत्सव फरवरी 1992 में हुआ था.

कुंभकोणम के आसपास कावेरी के किनारे पर कई ऐसे गांव बिखरे पड़े हैं, जो तमिलनाडु के कई महान संगीत-रचनाकारों और संङ्गीतज्ञों के जन्मस्थान हैं या फिर निवास स्थान. जैसे कोट्टैयुर, पापानासम, स्वामीमलाइ (अपनी सुंदर कार्तिकेय अथवा मुरुगा मंदिर के लिए प्रसिद्ध), उमायलपुरम्, कपिस्थलम

और सिरकइ.

कौड्रियुर ने अलवर और नयन्मारों के साथ-साथ आदर्श विद्वानों और संगीतकारों की एक पूरी श्रृंखला ही तैयार की. उनमें से कुछ के नाम यहां दिये गये हैं. महामोपाध्याय यू.वी. स्वामीनाथन अय्यर (1855-1942), जिन्होंने संगम-काल के तमिल साहित्य को पुनर्जीवित किया. वे आज भी तमिल ताता (तमिल पितामह) के नाम से जाने जाते हैं. उनके गुरू महाविद्वान टी.पी. मिनाक्षीसुंदरम पिल्लइ भी एक महान विद्वान और संगीत-रचनाकार थे. गोपालकृष्ण भारती ('नंदन चरित्रम्' के लेखक) और वेदनायकम पिल्लइ (पहले तमिल उपन्यास 'प्रतापनू मुदालियर चरित्रम्' के लेखक.) ये सभी कावेरी के किनारे पले-बढ़े और उसी के पानी से जीवन पाया. यू.वी. स्वामीनाथन अय्यर कुंभकोणम महाविद्यालय में कई वर्षों तक व्याख्याता रहे. हमें कुंभकोणम आकाशगंगा के उस सबसे चमकीले तारे को कभी नहीं भूलना चाहिए जिसका नाम है - श्रीनिवास रामनुजम. उनका अध्ययन भी यहीं हुआ और सभी जानते हैं कि भारत का यह अभूतपूर्व महान सपूत सारे विश्व में महान गणितज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हुआ.

कुंभकोणम छोड़ने के बाद कावेरी तिरुभुवनम से होकर अति उत्कृष्ट कलाकृति माना जाता है. इसके गोपुरम् पर शिखर विमान निर्मित किया गया है. बाद की चोल वास्तुकला में ऐसा देखा गया. सामने का मुख्य मंडपम् दारासुरम मंदिर की तरह रथ का रूप लिये हुए है. इसका निर्माण कुलोत्तुंग-तृतीय (1178-1218) के काल में किया गया था.

यहां से कुछ कि.मी. दूर तिरुविदैमरुदुर में तमिलनाडु का सबसे बड़ा देवालय है, जो कि महालिंगश्वर रूपी शिव को समर्पित है. यहां पाये जाने वाले एक विशेष पेड़ के नाम पर इसे 'मरुडमरम' कहा जाता है. इस विशाल मंदिर के शिखर बहुत ऊंचे हैं और इसके पराक्रम अव्यस्थित रूप से फैले हुए हैं. इसकी भीतरी दीवारों पर 1200 वर्ष पुराने अभिलेख पाये गये हैं. इस पर उकेरी गयी प्रशंसाएं नयन्मारों द्वारा सम्बंदर, अप्पर और मणिक्कावाचगर की तरह गायी जाती थीं.

श्रीनिवास रामानुजम

कावेरी का अगला पड़ाव है गीतिमय मईलाडुथुरई या मयूरम्. इसका शब्दिक अर्थ है 'वह स्थान जहां मूयर नृत्य करते हैं.' मयूरम् में स्थित लाकूडम घाट तलकावेरी के बाद दूसरा पवित्र स्थान है. हजारों तीर्थयात्री अक्टूबर-नवंबर महीनों में आनेवाले कडैमुखम दिवस पर यहां स्नान करने के लिए जमा होते हैं. कावेरी से जुड़े गीतों और महाकाव्यों में 'पट्टिनापलै' की तरह 'मयूरम्' का भी विशेष स्थान है.
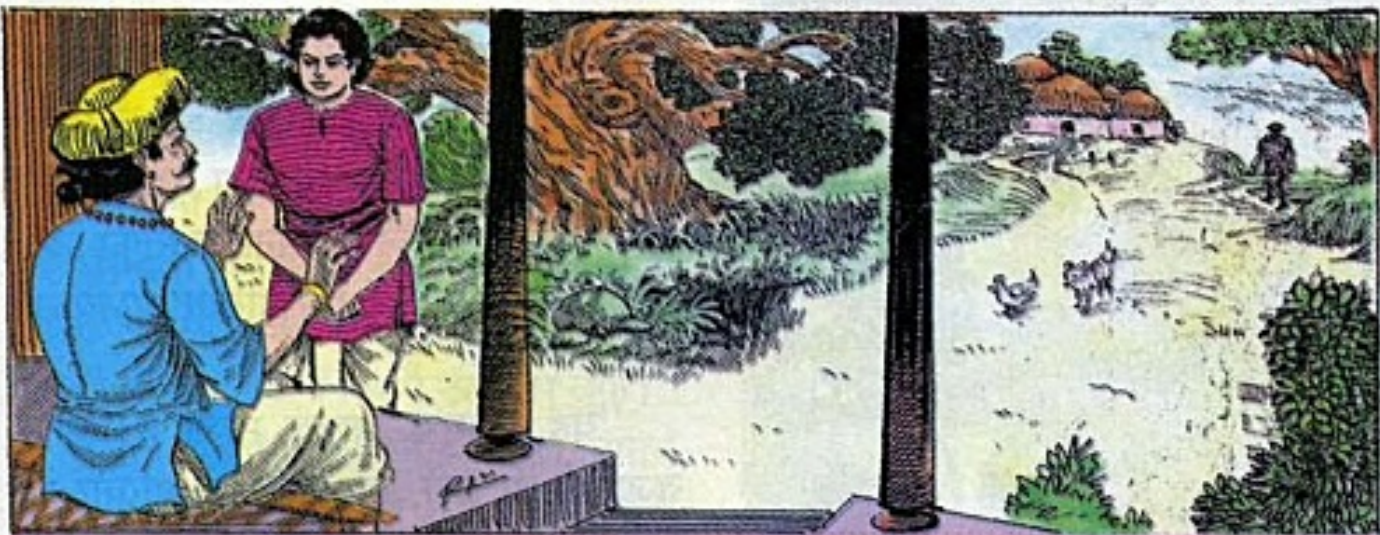
पिशाचों का बदला

चमनपुरी में शूरसेन नाम का एक युवक रहता था । बचपन में ही उसके माता-पिता चल बसे थे । उसके मामा ने कुछ दिनों तक उसकी देखभाल की पर दुर्भाग्य से वह भी संसार में न रहा। शूरसेन की देखभाल के लिए अब उसके परिवार में कोई नहीं था। इसलिए गाँववालों ने मिल कर उसका पालन पोषण किया। बड़ा होकर वह स्वस्थ और निडर-साहसी युवक निकला।

शूरसेन के लिए अब सारा गाँव ही उसका माँ-बाप था। गाँव में कहीं शुभ कार्य, उत्सव या समारोह होता तो वह बिना किसी के कहे जी जान से उसमें जुट जाता और हर काम को इतनी पूर्णता के साथ करता कि उसमें कोई कमी नहीं रह जाती । रात में सब की फसलों की जंगली जानवरों से रक्षा करता था। गाँव की बकरियों को उठा कर ले जाने वाले भेड़िये से भी भिड़ जाने में वह नहीं डरता था। सभी उसकी तारीफ में कहते - ''शूरसेन सचमुच शूरवीर है। जैसा नाम वैसा काम।''

एक दिन गाँव के पंडित अनिल शास्त्री ने उसे बुला कर कहा, - ''अरे शूर, शायद तुम्हें ज्ञात नहीं है कि गाँव किनारे इमली के पेड़ों के कुंज में दो पिशाचों ने अपना अड्डा बना रखा है। शहर से लौटते समय हमारे ग्रामवासियों को रात्रि में ये परेशान करते हैं । सारा गाँव इनसे भयभीत है। इसके अतिरिक्त, हमारे राजा गाँव की योगिनी देवी सिद्ध पीठ मन्दिर में दर्शन और पूजा हेतु कल आनेवाले हैं । ये पिशाच उनका कुछ अशुभ कर सकते हैं। यदि उनकी रक्षा करो तो उनके महल में मैं तुम्हें अच्छे पद पर नौकरी दिलवा दूँगा।''

शूरसेन ने शास्त्री जी की बातें श्रद्धापूर्वक सुनीं। फिर उसने कहा, - ''पंडित जी, मुझे इस गाँव में कोई कष्ट नहीं है। मैं यहाँ आराम

महेश्वर

से हूँ। राजा के महल में काम करने की मेरी इच्छा नहीं है। फिर भी, राजा की रक्षा करना हमारा धर्म है। हमारे लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि राजा परिवार के साथ हमारे गाँव में आ रहे हैं और वे हमारे अतिथि होंगे। आप निश्चिंत रहिये। उन पर कोई आँच नहीं आयेगी। मैं पिशाचों से निपट लूँगा।''

शूरसेन उसी रात इमली के वृक्षों के घने कुंज में जाकर छिप गया। उसने एक कुएं के मुंड़ेर पर दो पिशाचों को बैठे देखा। उनमें से एक लम्बा और दुबला था। दूसरा नाटा और मोटा था। दोनों आपस में बातें कर रहे थे।

लम्बा पिशाच बता रहा था, - ''हम जिस सुन्दर सरोवर के पास पहले रहते थे, यह घमंडी राजा वहाँ अपने सैनिकों के साथ शिकार खेलने आने लगा। एकान्त भंग होने के कारण हमें वह स्थान छोड़ना पड़ा। अब हमें उसी के कारण इस भद्दी जगह पर रहना पड़ रहा है। हमें उससे बदला लेने का सुनहला मौका मिल रहा है। वह कल ही यहाँ सपरिवार आनेवाला है।''

''यह सचमुच अच्छा मौका है। सिर्फ़ राजा को ही क्यों, हम उसे सारे परिवार के साथ मौत के घाट उतार देंगे।'' नाटे पिशाच ने कहा।

''ठीक है । जैसे ही राजा का रथ गाँव की सीमा पर आकर पहाड़ी के पास से मुड़ेगा, मैं ऊपर से एक भारी शिला उसके रथ पर लुढ़का दूँगा। रथ में सवार सभी दब कर मर जायेंगे।'' लम्बे पिशाच ने कहा।

''और यदि इससे वह बच निकला तो मैं पूजा मंडप में आग लगा कर उन सब को जला कर भस्म कर दूँगा।'' नाटे ने हँसते हुए कहा।

''लेकिन, इन दोनों खतरों से भी राजा बच निकला तो क्या हम चुप बैठ जायेंगे?'' लम्बा पिशाच यह बोल कर कुछ सोचने लगा।

कुछ देर मौन रहने के बाद नाटे पिशाच ने अचानक उठ कर चुटकी बजाई और हँसते हुए कहा, - ''नहीं, हम कभी चैन से नहीं बैठेंगे, जब तक राजा से बदला न ले लें। हमने इसका भी उपाय सोच लिया है। तुम पहले से ही राजा के पान के डिब्बे में विषैला बिच्छू बन कर बैठ जाना । यदि इन सब खतरों से बच कर राजा सुरक्षित महल में पहुँच जाये तो रात्रि में भोजन के पश्चात जब वह पान

के लिए पान का डिब्बा खोले तो उसमें से निकल कर उसे डंक मार देना।

"मैं रानी की सोने की फूलवाली टोकरी में दो सिरवाला विषधर साँप बन कर पहले से ही छिप जाऊँगा। जब रानी फूल लेने के लिए टोकरी में हाथ डालेगी तब मैं उसे डँस लूँगा।"

"वाह ! तुमने कितना अच्छा उपाय सोचा। इससे वे निश्चित रूप से बच नहीं पायेंगे। समझो हमने बदला ले ही लिया।" यह कह कर वह भी ठठाकर हँसने लगा और खुश होकर उछलने-कूदने लगा।

दूसरे दिन शाम को शूरसेन गाँव की सीमा पर खड़ा हो गया। राजा का रथ आते हुए देख कर उसने संकेत से रथ को रुकने के लिए कहा। फिर अपना परिचय देकर सारथी को सावधान करते हुए कहा,- "आगे पहाड़ी के पास से जानेवाली मोड़ बहुत खतरनाक है। मुड़ते ही रथ की गति तेज कर देना। वहाँ राजा के किसी विपत्ति में फँसने का भय है। इसलिए काफी सावधान रहना।" राजा ने यह बात सुन ली। वह अभी खतरे की आशंका पर विचार ही कर रहा था कि वृद्ध मंत्री ने कहा कि इस क्षेत्र के बारे में मुझे जानकारी नहीं है, इसलिए जैसा वह आदमी कहता है, उसी में हमारी भलाई है।

सारथी ने वैसा ही किया जैसा शूरसेन ने कहा था। उसका रथ मोड़ पार करते ही तेज गति से बढ़ गया। तभी पहाड़ी पर से एक बड़ी चट्टान गिरी। राजा बाल-बाल बच गया। सब चकित थे कि यह कैसे हुआ और इससे भी ज्यादा आश्चर्य इस बात से उन्हें हुआ कि इस खतरे की जानकारी शूरसेन को कैसे हुई। जो भी हो, सबने उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। मंत्री और सेनापति ने उसका सम्मान करने की राजा से अनुशंसा की । राजा मान गया।
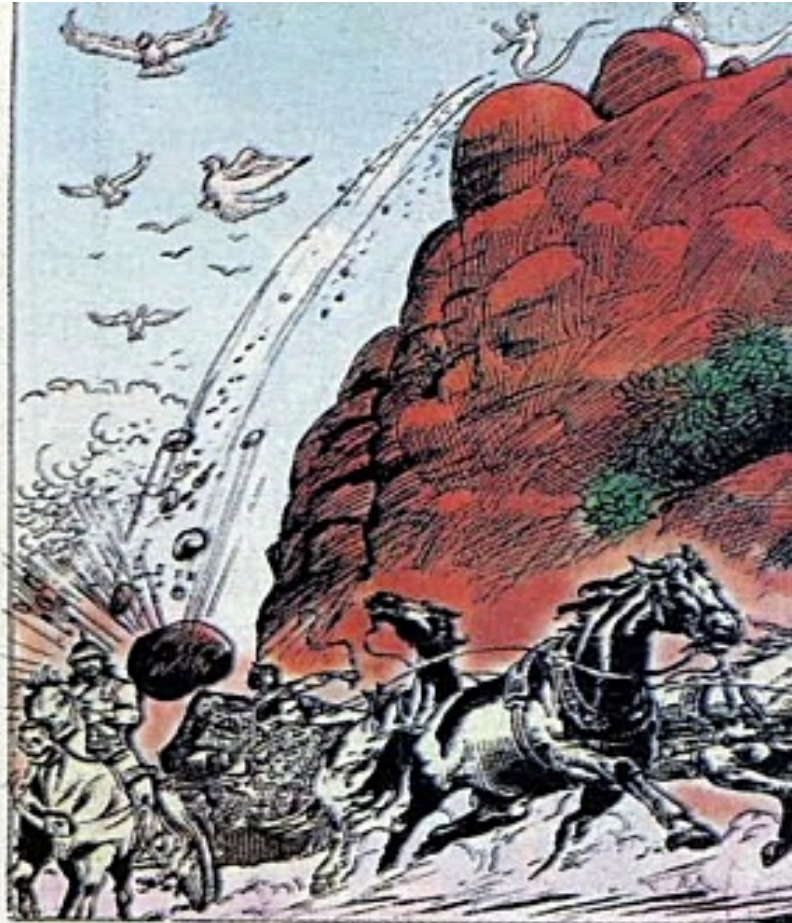
इसके पश्चात रथ गाँव में पहुँचा। ग्रामीणों ने राजा और उसके परिवार का स्वागत करने के लिए एक मंच बनवाया था और उस पर राजा, रानी और राजकुमारी के लिए आसन बनाये गये थे। जब राजा मंच पर चढ़ने लगे तो शूरसेन पुनः आकर बोला, "महाराज, आप तीनों मंच पर लगाये गये आसनों पर न बैठें। एक ओर से मंच पर जाकर दूसरी ओर से नीचे आ जायें। नहीं तो कुछ भी अनर्थ हो

सकता है।''

मोटा पिशाच मंच के नीचे छिप कर आग लगाने के लिए बैठा हुआ था। वह राजा के मंच पर चढ़ने का इंतजार कर रहा था। राजा, रानी और राजकुमारी जैसे ही मंच की ओर बढ़े और आसन के निकट पहुँचे कि उसने मंच में आग लगा दी और कहा, - ''राजपरिवार का सर्वनाश हो।''

लेकिन तब तक राजपरिवार मंच की दूसरी ओर जा चुका था। वे जलने से बाल-बाल बच गये। मंच देखते-देखते जल कर स्वाहा हो गया। गाँव भर में हाहाकार मच गया। किसी को पता न चला कि यह दुर्घटना कैसे हुई। सब चकित थे।

मंत्री और सेनापति को शूरसेन पर सन्देह होने लगा। उन्होंने राजा से कहा, - ''इसे आप की जान के खतरे की जानकारी कैसे हो गई? हो सकता है, यह जादूगर हो। हो सकता है, यह सब इसी का षड्यंत्र हो। जब तक सचाई का पता न चल जाये तब तक इसे बन्दी बना कर रखें।''

''ठीक है।'' राजा ने कहा।

सैनिक जैसे ही उसे बन्दी बनाने के लिए आगे बढ़े कि ग्राम अधिकारी ने राजा से कहा, - ''महाराज, मैं इसे इसके बचपन से ही जानता हूँ । यह अनाथ है, पर बड़ा ही परोपकारी है। दूसरों की भलाई करना इसका स्वभाव है। और मंत्र-तंत्र जादू से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।''

तभी शूरसेन ने बड़े शांत भाव से राजा से पुनः कहा, - ''दो पिशाचों के कारण आज रात को अपने ही राजमहल में आपके और रानी के प्राण संकट में होंगे। यदि मैं साथ न रहा तो आप दोनों का बच पाना असंभव है।''

मंत्री ने सलाह दी, - ''महाराज, शूर को भी राजभवन में साथ ले चलें। रात में आनेवाली विपत्ति यदि सचमुच घटित हुई तो हो सकता है उससे भी यह आपकी रक्षा करे जैसे इसने अब तक दो विपत्तियों से आप की रक्षा की है।''

राजा ने बात मान ली। शूरसेन भी राज परिवार के साथ राजभवन आ गया। राजा पर आनेवाले संकट को देखने के लिए मंत्री और सेनापति भी वहाँ पहुँचे।

रात के भोजन के बाद राजा जैसे ही पान

का डिब्बा खोलने लगा कि शूर ने डिब्बा अपने हाथ में ले लिया। उसने उसे स्वयं खोला। उसके अन्दर बैठा हुआ बिच्छू शूर सेन को डंक मारने ही वाला था कि उसने डिब्बा बन्द कर दिया।

उसके बाद उसने देखा कि रानी फूलों की टोकरी में से फूल लेने के लिए ढक्कन खोलने जा रही है। शूरसेन ने उसे रोक कर स्वयं टोकरी का ढक्कन खोला। तभी उसमें छिप कर बैठा हुआ सर्प फुफकारने लगा। शूरसेनने तुरन्त ढक्कन बन्द कर दिया।

सब के सब यह देख कर चकित और भयभीत थे। शूरसेन ने राजा से कहा, - ''महाराज, अपने सैनिकों से कहिये कि पान के डिब्बे और फूलों की टोकरी को बहुत सावधानी से जमीन के अन्दर छः फुट की गहराई में गाड़ दें। ये दो दुष्ट पिशाच हैं और आप से बदला के लिए आपका परिवार सहित विनाश करने पर तुले हुए थे।'' फिर उन दोनों पिशाचों की कहानी राजा को सुना दी।

शूरसेन की वीरता और परोपकारिता पर राज परिवार मुग्ध हो गया।

राजकुमारी ने कहा, - ''महाराज, ऐसे वीर को तो हमारे राज्य का सेनापति होना चाहिये।''

रानी ने कहा, - ''ऐसे बुद्धिमान को तो हमारे राज्य का मंत्री होना चाहिये ।''

सेनापति और मंत्री ने अपने-अपने पद पर खतरे की संभावना देखते हुए कहा, - ''महाराज, ऐसा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति तो युवरानी के लिए योग्य वर है और आप का उत्तराधिकारी होने योग्य है।

राजा का सब की बातों का एक ही उत्तर था - ''ठीक है।''

शूरसेन ने मन में सोचा कि राजा का अपना कोई विचार नहीं है। वह सब के विचारों को ''हाँ, ठीक है'' कह देता है। ऐसे व्यक्ति के पास एक क्षण भी रहना खतरे से खाली नहीं है। इसलिए वह तुरन्त वहाँ से उठा और यह कह कर चला आया कि अपने बीमार पिता को देखने के लिए अभी गाँव लौटना मेरे लिए आवश्यक है।

तकलीफ़

एक बार गर्मी के दिनों में रामपुर के सभी कुएँ सूख गये। पानी की बड़ी तंगी हो गई। लेकिन गाँव के बाहर के एक बड़े तालाब में अब भी पानी था। लोग वहीं से पानी लाते थे।

कृष्णा गाँव के दस परिवारों के लिए वहीं से घड़ों में पानी भर के लाता था और हरेक परिवार से उसके बदले महीने में दस रुपये लेता था।

वह ईमानदारी से अपना काम करता और हर रोज बिना नागा किये समय पर उन्हें पानी पहुँचा देता था।

एक दिन पाँव में काँटा चुभ जाने के कारण किसी के घर में वह पानी लाकर नहीं दे सका। घर के मालिकों को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होंने महीने के अन्त में एक दिन नागा के लिए उसके पैसे नहीं काटे और पूरी मजदूरी दे दी।

लेकिन वीरबाहु नाम का एक घर का मालिक बड़ा कंजूस था । उसने एक दिन के नागा के लिए महीने भर की मजदूरी में से एक रुपया काट लिया।

कृष्णा ने अनुरोध करते हुए कहा, - ''मैं हर रोज आप को समय पर पानी लाकर देता रहा। केवल एक दिन पाँव में काँटा चुभ जाने के कारण काफ़ी तकलीफ़ हो गई थी, जिससे मैं चल नहीं सकता था। उसके लिए एक रुपया काट लेना उचित नहीं लगता ।''

''तुम्हारी तकलीफ़ से हमें क्या वास्ता?'' वीरबाहु ने दो टूक जवाब दिया । कृष्णा चुपचाप चला गया।

एक दिन वीरबाहु के घर कुछ मेहमान आ गये। कृष्णा ने उस दिन जान-बूझ कर उसके घर पानी नहीं दिया। दूसरे दिन वीरबाहु ने आग-बबूला होते हुए कृष्णा से कहा, - ''जानते हो, कल पानी के बिना हमें कितनी तकलीफ़ हुई!''

''आप की तकलीफ़ से हमें क्या वास्ता? चाहें तो एक रुपया क़ाट लीजिये ।'' कृष्णा ने लापरवाही से उत्तर दिया।

वीरबाहु के पास कोई उत्तर नहीं था।

महाभारत

सबसे पहले भीम ने युद्ध शुरू किया । वह भयंकर रूप से सिंहनाद करता हुआ कौरवों की सेना पर टूट पड़ा । इस पर दुर्योधन, दुश्शासन, दुर्मुख, दुस्सह इत्यादि अनेक योद्धाओं ने भीम को घेर लिया। उन सबका सामना उपपांडव, अभिमन्यु, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न आदि ने किया। धीरे धीरे युद्ध सभी क्षेत्रों में फैल गया।

सर्वप्रथम भीष्म और अर्जुन के बीच द्वन्द्व युद्ध हुआ। दोनों ने अपने अपने साहस का अच्छा परिचय दिया। इसके अतिरिक्त सात्यकी ने कृतवर्मा के साथ, अभिमन्यु ने बृहद्बल (कोसल राजा) से, भीम ने दुर्योधन के साथ, दुश्शासन ने नकुल से, दुर्मुख ने सहदेव के साथ, युधिष्ठिर ने शल्य से, धृष्टद्युम्न ने द्रोण के साथ, धृष्टकेतु ने बाह्लिक से, घटोत्कच ने अलंबुस से, शिखण्डी ने अश्वत्थामा से, विराट ने भगदत्त से तथा द्रुपद ने सैंधव के साथ द्वन्द्व युद्ध किये। पर उनमें कोई पराजित नहीं हुआ। वह युद्ध देखने लायक था ।

इसके बाद दोनों दलों के बीच अंधाधुंध युद्ध चला । पर भीष्म ने अपने प्रताप का अच्छा परिचय दिया। सब उसकी वीरता पर चकित थे। ठीक दोपहर के वक्त भीष्म पांडवों की सेना में घुस पड़े । उनकी रक्षा हेतु दुर्मुख, कृतवर्मा, कृपाचार्य, शल्य और विविशती साथ में थे। अभिमन्यु ने देखा कि भीष्म पांडवों
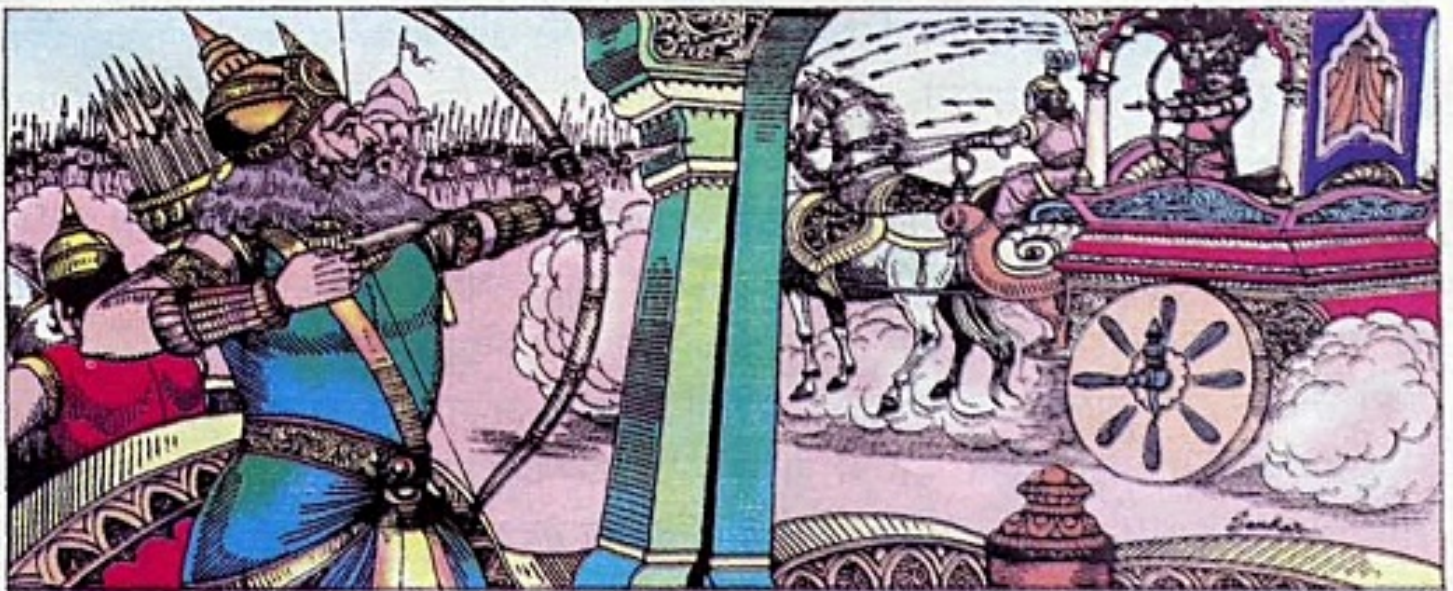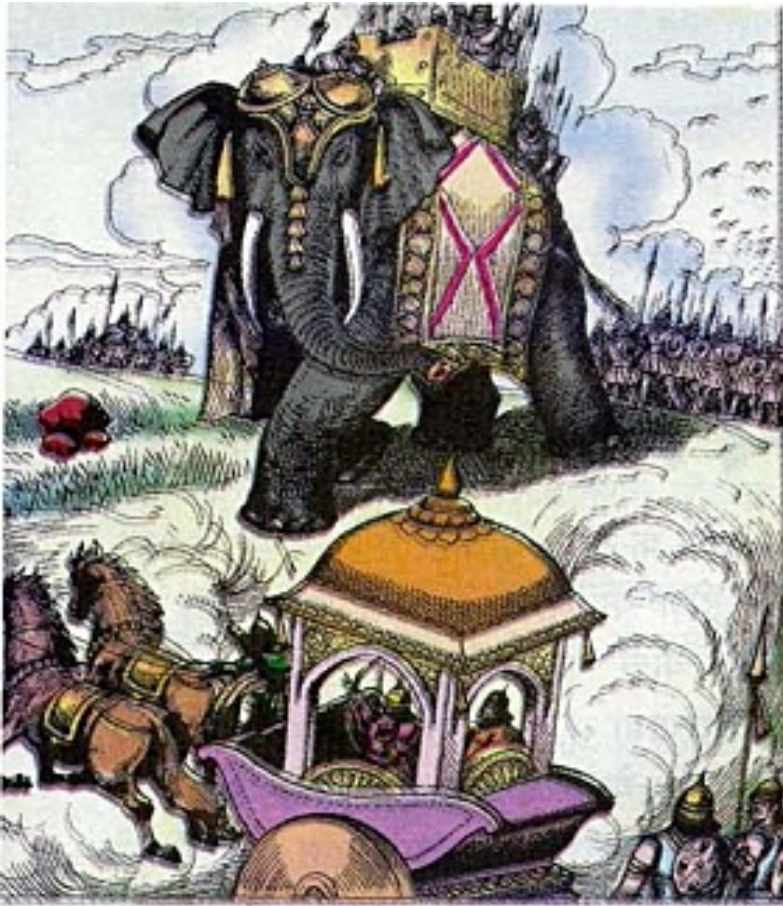
की सेना का संहार करते जा रहे हैं, इसलिए क्रोधित हो वह उन पर टूट पड़ा और उनके झण्डे को गिरा दिया और उनके साथ आये हुए वीरों के छक्के छुड़ा दिये। उस युद्ध को देख लोगों ने सोचा कि अभिमन्यु अर्जुन की युद्ध कला को भी मात कर रहा है। शीघ्र ही अभिमन्यु की मदद के लिए भीम, विराट और उसके पुत्र, सात्यकी, धृष्टद्युम्न वगैरह दस योद्धा आ पहुँचे।

उत्तर एक हाथी पर सवार हो शल्य से लड़ने आया, पर उस युद्ध में चोट खाकर हाथी पर से नीचे जा गिरा। इसे देख उत्तर का भाई श्वेतु ने एक साथ सात कौरव योद्धाओं का सामना किया। उस भयंकर युद्ध में शल्य मरते-मरते बच गया। लेकिन भीष्म से श्वेतु की रक्षा करने के हेतु पांडवों को भयंकर युद्ध करना पड़ा। इसके परिणाम स्वरूप दोनों पक्षों के बीच भारी युद्ध हुआ। श्वेतु ने बाक़ी सभी कौरव योद्धाओं को भगा दिया और भीष्म के साथ विकट युद्ध किया। उस वक़्त यदि श्वेतु ने भीष्म का सामना न किया होता तो भीष्म ने पांडवों की अधिकांश सेना का संहार कर दिया होता। श्वेतु ने अपने पराक्रम का अद्‌भुत परिचय देकर आखिर भीष्म को भी पीछे हटने के लिए बाध्य किया। इस पर पांडवों ने हर्षनाद किये।

भीष्म के पीछे हटते ही श्वेतु धृतराष्ट्र के पुत्रों के पास पहुँचा। कौरव सेना का नाश होते देख भीष्म ने फिर श्वेतु का सामना किया। भीष्म की सहायता के लिए आठ कौरव योद्धा आये और सब ने एक साथ श्वेतु पर बाणों की झड़ी लगा दी। फिर भी श्वेतु ने सब का एक साथ सामना किया और भीष्म को अनेक प्रकार से तंग किया। देखनेवालों को लगा कि भीष्म श्वेतु के हाथों पराजित हो जायेंगे। उस युद्ध में श्वेतु का रथ टूट गया। भीष्म का वध करने के लिए श्वेतु गदा लेकर भीष्म के रथ पर आया। उसके गदे के प्रहार से भीष्म का रथ टूट गया। भीष्म पहले ही जानता था कि उसका रथ टूट जायेगा, इसलिए वह अपने रथ से उतरकर दूसरे रथ पर चढ़ गया और श्वेतु पर टूट पड़ा।

श्वेतु अपना रथ खोकर पृथ्वी पर खड़ा था। इसे देख सात्यकी, भीम, अभिमन्यु वगैरह उसकी मदद के लिए आ पहुँचे। लेकिन भीष्म

ने उन सब को दूर ही रोक दिया। इसके बाद भीष्म ने एक बाण का प्रयोग करके श्वतु के प्राण ले लिए। श्वेतु महारथी ही न था, अपितु पांडव सेनापतियों में से एक था, अतः उसकी मृत्यु से पांडवों को अपार दुख हुआ और कौरवों को अमित आनंद । दुर्योधन वाद्यों के नाद के साथ नाच उठा !

श्वेतु की मृत्यु हो जाने पर उसका भाई शंखु क्रुद्ध हो उठा और कृतवर्मा के साथ रहनेवाले शल्य के साथ युद्ध करने को आया। तब सात कौरव योद्धा शल्य की मदद के लिए आये। भीष्म भी यम की भाँति शंखु पर टूट पड़ा। इस पर अर्जुन शंखु की मदद के लिए आ पहुँचा । शल्य ने शंखु का रथ तोड़ दिया, तब शंखु अर्जुन के रथ पर जा बैठा।

भीष्म अर्जुन को छोड़ द्रुपद पर टूट पड़ा और अपने बाणों से दावानल की भाँति द्रुपद की सेना का नाश करने लगा। उस वक्त भीष्म के अपूर्व युद्ध को देख पांडव योद्धा काँप उठे। उनका सामना करना पांडवों के लिए संभव प्रतीत नहीं लगा।

इतने में सूर्यास्त हो गया। दोनों पक्षों के लोग युद्ध रोककर अपने अपने शिविरों में चले गये। भीष्म ने जो भयंकर युद्ध किया था, उस पर दुर्योधन अत्यंत प्रसन्न हुआ। मगर प्रथम दिन अपनी सेना की अपार क्षति देखकर युधिष्ठिर बहुत दुखी हुआ और कृष्ण के पास जाकर बोला, - ''कृष्ण, आज भीष्म ने कैसा दारुण युद्ध किया है? हमारी सेना को दावानल की भांति जला दिया है। भीष्म को कौन पराजित कर सकता है? उनका सामना करके मैंने मूर्खता की। हे कृष्ण, हमलोग जंगलों में जाकर आराम से जीयेंगे। इससे इन सब राजाओं को मरने से बचाया भी जा सकता

है। राज्य की आकांक्षा ने मुझे इस हालत में पहुँचा दिया है। मेरे सभी छोटे भाई घायल हो गये हैं। हम जिंदगी भर तपस्या करेंगे। मुझे बताइये कि अब मेरा कर्तव्य क्या है? युद्ध में अर्जुन तटस्थ रह रहा है। अकेला भीम पूरे मनोयोग के साथ युद्ध कर रहा है। लगता है कि भीष्म के हाथों हमारी मृत्यु लिखी हुई है।''

कृष्ण ने युधिष्ठिर को सांत्वना देते हुए कहा, - ''तुम्हारा इस तरह व्याकुल होना ठीक नहीं है। तुम्हारे भाई तीनों लोकों को हराने की शक्ति रखते हैं। सात्यकी, विराट, द्रुपद, धृष्टद्युम्न जैसे महारथी अनेक लोग तुम्हारे पक्ष में हैं । इसलिए तुम्हें चिंता करने की क्या जरूरत है? शिखण्डी भीष्म को मारने के लिए ही तो पैदा हुआ है !''

इस पर युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न से कहा - ''कृष्ण ने हमें आदेश दिया है कि तुमको सेनापति बनायें। इसलिए तुम्हें कौरव सेनाओं का संहार करना चाहिए। हम सब तुम्हारे पीछे रहेंगे ही ।''

इस पर धृष्टद्युम्न ने कहा - ''राजन, मैं द्रोण का वध करने के हेतु ही पैदा हुआ हूँ। भीष्म, द्रोण, कृप, शल्य तथा अन्य सभी योद्धाओं का मैं सामना करूँगा।''

''मैंने सुना है कि क्रौंच-व्यूह शत्रु का नाश करता है। देवता और राक्षसों के युद्ध के समय इंद्र ने बृहस्पति को यह व्यूह बताया था। यह व्यूह-रचना सब लोग नहीं जानते। कल हमारी सेना को क्रौंच-व्यूह में खड़ा करो।'' युधिष्ठिर ने कहा।

दूसरे दिन सबेरा होते ही पांडवों की सेना क्रौंच-व्यूह में खड़ी हो गयी। उसके आगे अर्जुन खड़ा था । व्यूह के शिरोभाग के पास द्रुपद अपनी सेना के साथ खड़ा हो गया। युधिष्ठिर पूँछ के स्थान पर, भीम और धृष्टद्युम्न पंखों के स्थान पर खड़े हो गये। सूर्योदय के पूर्व ही व्यूह-रचना निर्मित हो युद्ध के लिए तैयार हो गयी।

पांडवों की सेना को क्रौंच-व्यूह में देख भीष्म, द्रोण, दुर्योधन आदि ने मिलकर प्रति व्यूह की रचना की। उसमें विविध योद्धा विभिन्न स्थानों में थे। दोनों पक्षों की सेनाएँ अत्यंत उत्साह के साथ शंख, भेरी आदि का निनाद करके युद्ध के लिए तैयार हो गयीं।

युद्ध के प्रारंभ होते ही भीष्म ने अभिमन्यु,
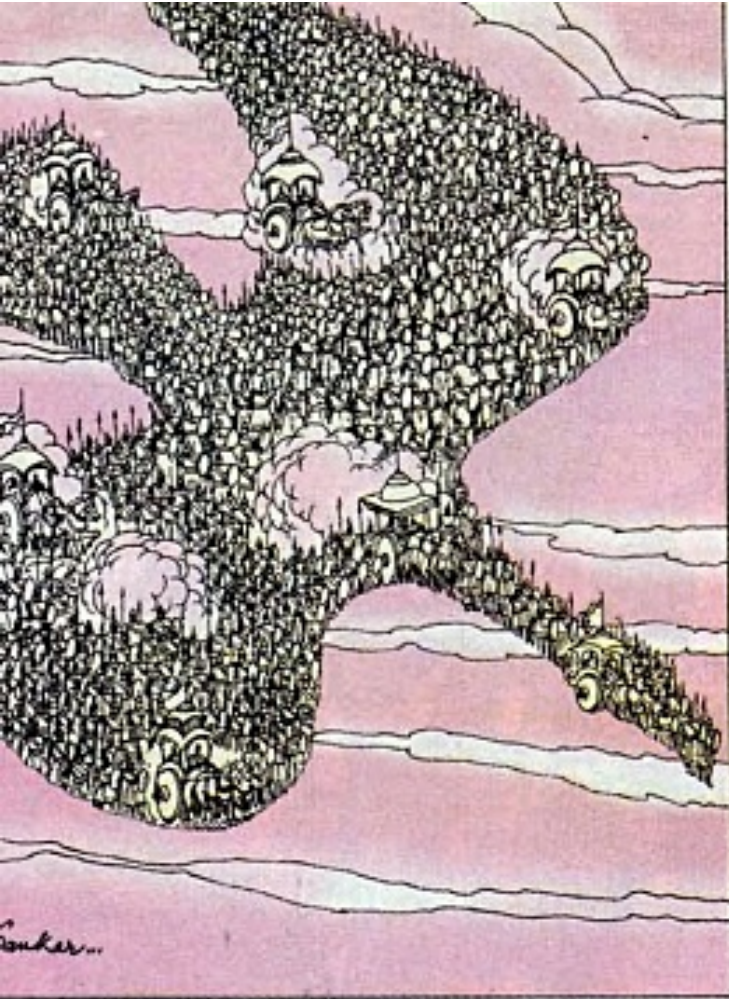
भी अर्जुन विचलित न हुआ, बल्कि उत्साह में आकर सबको घायल कर दिया। तब अर्जुन की मदद के लिए सात्यकी, विराट, धृष्टद्युम्न, उपपांडव, अभिमन्यु भी युद्ध करने आये। अर्जुन को द्रोण से मुक्त करने के ख्याल से द्रुपद ने द्रोण पर हमला किया। तब अर्जुन शत्रु के प्रमुख वीरों के बीच जाकर युद्ध करने लगा।

इसी समय दुर्योधन ने भीष्म के पास जाकर कहा, - "दादाजी, अर्जुन हमारी सेना का सर्वनाश कर रहा है। आप के कारण ही कर्ण ने शपथ ली कि आप के युद्ध क्षेत्र में रहते वह अस्त्र ग्रहण नहीं करेगा। वह भी होता तो बड़ा अच्छा होता। लेकिन इस वक्त वह नहीं है। इसलिए अर्जुन का वध करने का उपाय आप ही सोचें।"

दुर्योधन के मुँह से ये बातें सुनकर भीष्म खीझ उठे और बोले, - "छी, यह तुम्हारा कैसा क्षत्रिय धर्म है?" इसके बाद भीष्म अर्जुन के रथ के समीप पहुँचे। तुरंत भीष्म की सहायता के लिए कौरव योद्धा तथा अर्जुन की मदद के लिए पांडव वीर एकत्र हो गये। देखते-देखते भीष्म तथा अर्जुन के बीच युद्ध प्रारंभ हो गया। दोनों उत्साह में आकर युद्ध करने लगे। दोनों एक दूसरे के बाणों से अपनी रक्षा करते एक समान अपने साहस का परिचय देने लगे। इस युद्ध में दोनों के रथ टूट गये, दोनों के घोड़े व सारथी घायल हुए। कृष्ण को भी तीन बाण लगे और उसके शरीर से खून बहने लगा। इस पर रोष में आकर अर्जुन

भीम, अर्जुन, विराट, धृष्टद्युम्न इत्यादि पांडव दल के योद्धाओं पर बाणों की वर्षा कर दी। इसलिए पांडवों का व्यूह टूटने लगा। अर्जुन ने क्रोध में आकर कृष्ण से कहा कि मेरे रथ को भीष्म की ओर ले चलें। उसने भीष्म का वध करने का निश्चय किया। कपि ध्वजा के साथ अनेक प्रकार की पताकाओं वाले अर्जुन का रथ भीष्म की ओर बढ़ रहा था। मार्ग में अर्जुन ने अपार कौरव सेना का भी वध किया।

इसे देख भीष्म अर्जुन के सामने आ गये। उनके पीछे रक्षा हेतु सैंधव आदि अनेक वीर आये। अर्जुन पर भीष्म के साथ द्रोण, कृप, दुर्योधन, शल्य, अश्वत्थामा, विकर्ण इत्यादि ने भी बाण चलाये। बाणों की चोट खाकर

ने भीष्म के सारथी पर भी तीन बाण चलाकर उसे घायल कर दिया। इस युद्ध में न भीष्म अर्जुन को और न अर्जुन भीष्म को हरा पाया।

उसी समय अन्य द्वन्द्व युद्ध भी शुरू हो गये। द्रोण तथा धृष्टद्युम्न के बीच घोर युद्ध हुआ। धृष्टद्युम्न का युद्ध-कौशल देख पांडव वीरों ने उत्साह में आकर सिंहनाद किये। आखिर धृष्टद्युम्न अपने बाण तथा रथ को खो बैठा । उसके कवच में छेद बन गये और द्रोणके बाणों के प्रहारसे वह घायल हो गया। तब भीम ने आकर उसकी रक्षा की और द्रोण के साथ युद्ध प्रारंभ किया।

तब दुर्योधन ने भीम के ऊपर कालिंग तथा उसकी सेना को भेजा । इस पर द्रोण भीम को छोड़ विराट और द्रुपद के साथ युद्ध करने गया। धृष्टद्युम्न एक दूसरे रथ में बैठ कर युधिष्ठिर के पास पहुँचा। भीम ने कालिंग की सेना के साथ युद्ध किया और कालिंग के पुत्र शुक्रदेव, भानुमत, श्रुतायुष आदि का वध कर दिया । फिर उसकी सेना के बीच घुसकर अंधाधुंध सबका वध करने लगा। इस दृश्य को देख धृष्टद्युम्न में नया उत्साह आ गया और सिंहनाद करता हुआ भीम की सहायता के लिए आ पहुँचा। उस वक्त भीम मानव की तरह नहीं बल्कि साक्षात काल जैसा दिखाई दे रहा था।

सेनाओं के बीच कोलाहल देख वेग के साथ भीष्म उस ओर आ पहुँचा । सात्यकी, भीम और धृष्टद्युम्न उस पर टूट पड़े। भीष्म ने तीनों के साथ भयंकर युद्ध किया। इसमें भीम के रथ के घोड़े मर गये। तब धृष्टद्युम्न भीम को अपने रथ पर चढ़ा कर दूसरी ओर ले गया। भीम को प्रसन्न करने के लिए सात्यकी ने भीष्म के सारथी को अपने बाणों का प्रयोग करके मार डाला। तब भीष्म के रथ को घोड़े अन्य दिशा में खींच कर ले गये। इसके बाद सात्यकी भीम के पास आकर उसके कंधे को थपथपाकर बोला, - "वाह भीम, तुम्हारे प्रताप का क्या कहना? तुमने अकेले ही कालिंग तथा उसके पुत्रों को मार डाला।" यों कहकर उसके साथ गले लग कर उसने भीम का उत्साह बढ़ाया।

प्रतिफल

हेलापुरी ग्राम में विवेक आचार्य नाम का एक वैद्य रहता था। उसकी चिकित्सा की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। राज्य से बाहर सुदूर नगरों और ग्रामों से भी उसके पास असाध्य रोगी आते और स्वास्थ्य-लाभ करते।

वह नित्य प्रातःकाल से दोपहर तक रोगियों की चिकित्सा करता और उसके बाद शिष्यों को आयुर्वेद शास्त्र की शिक्षा देता।

जो रोगी इनके पास चिकित्सा के लिए आते, वे वैद्य के आदेश के अनुसार प्रतिफल देकर ही जाते। वे प्रतिफल देने में ज़रा भी संकोच नहीं करते क्योंकि वैद्य की अच्छी चिकित्सा के कारण वे रोगमुक्त हो जाते थे।

एक दिन वैद्य ने रोगी की जाँच और चिकित्सा के बाद उससे पूछा, - ''रात को तुमने क्या खाया था?''

रोगी ने कहा, - ''रात को मांड़ के साथ प्याज के चन्द टुकड़े खाये थे।''

''ठीक है, फिर चिकित्सा के बदले दो अशर्फियाँ चुका देना।''

''रात को तुमने क्या खाया?'' वैद्य ने एक अन्य रोगी की जाँच करके दवा देने के बाद उससे पूछा।

''दाल, चावल और सब्जी खाने के बाद खीर खाई और सोने से पूर्व एक आम खाया।'' दूसरे रोगी ने बताया।

''तब तुम दस अशर्फियाँ देकर जाना।'' वैद्य ने बताया।

रोगी दस अशर्फियाँ सहर्ष देकर चला गया। उसके बाद एक रोगी और आया। वैद्य ने उसे भी दवा देकर यही प्रश्न किया, - ''रात में तुमने क्या खाया था?''

''रात में मैंने भोजन के साथ भुना हुआ मांस, मछली का शोरबा और तला हुआ झिंगा लिया था।'' तीसरे रोगी ने कहा।

''ठीक है! तुम बीस अशर्फियाँ देकर

गौतम सेन

जाना।'' वैद्य ने कहा ।

रोगी खुशी से बीस अशर्फियाँ चुका कर चला गया।

वैद्य के पास बैठा हुआ उसका मित्र यह सब ध्यानपूर्वक देख रहा था। वैद्य की चिकित्सा की पद्धति उसे बहुत अच्छी लगी। लेकिन चिकित्सा के बाद हर रोगी से उसका यह पूछना कि 'रात को तुमने क्या खाया' उसे कुछ विचित्र लगा।

जब सब रोगी चले गये, तब मित्र ने वैद्य से उसका कारण पूछा। वैद्य ने मुस्कुराते हुए कहा, - ''मैं हर रोगी से उसके रात्रि भोजन के बारे में पूछ कर यह जान लेता हूँ कि उसकी आर्थिक अवस्था कैसी है। उनके जीवन-स्तर के अनुसार मैं उनसे चिकित्सा का प्रतिफल माँगता हूँ, ताके उन्हें चुकाने में कठिनाई न हो।

''इतना ही नहीं, रोगी की खाने की रुचि और आदत से मुझे उसके रोग का निदान करना भी सरल हो जाता है । मनुष्य के अधिकांश रोग खान-पान और आहार-विहार में असंयम के कारण होते हैं। गरीबों का रोग पोषक तत्वों के अभाव के कारण होता है । जबकि धनी व्यक्ति अपनी पाचन शक्ति से अधिक खा लेने के कारण प्रायः बीमार रहते हैं।

''रोग का एक प्रमुख कारण है, भोजन के पदार्थों का कुमिश्रण । प्रायः लोग नहीं जानते कि किस पदार्थ के साथ क्या खाना चाहिये और क्या नहीं । जैसे - दूध पीने के बाद या पहले खट्टा या नमकीन या मांस-मदिरा का प्रयोग करना चाहिये या नहीं । भोजन के कुमिश्रण से भोजन विषाक्त हो जाता है और भयंकर रोगों की संभावना हो जाती है।

''इस प्रकार रोगी की भोजन सम्बन्धी रुचि से दवा का चुनाव आसान हो जाता है। मेरे रोगी इसीलिए एक बार की दवा से ही चंगा हो जाते हैं।''

वैद्य की उदारता से मित्र बहुत प्रभावित हुआ और उसने वैद्य को इसके लिए बधाई दी।

कंजूस

शिवकरन गाँव का एक छोटा व्यापारी था। वह रहता तो गाँव में था लेकिन व्यापार शहर में करता था। वह पैसा कमाना तो जानता था, पर उसमें खर्च करने की बुद्धि नहीं थीं ।

वह कभी-कभी, गाँव से शहर आने-जाने में परेशानी के कारण शहर में ही रहना चाहता था। किन्तु खर्च बचाने के लिए गाँव में ही रह गया। वह सबेरे खा-पीकर घर से निकल जाता तो शहर से रात को ही लौटता था।

वह अपनी पत्नी राधा को भी कम खर्च करने की सलाह देता। खाने-पीने में पैसे बर्बाद करना उसे अच्छा नहीं लगता था। वह प्रायः पत्नी को किफायत से रहने का पाठ पढ़ाता । कहता, - ''भूख मिटाने के लिए खाना चाहिये, जीभ के स्वाद के लिए नहीं।'' इसलिए वह हर रोज मामूली खाना ही बनाती । पर्व-त्योहारों पर भी कभी शिवकरन ने पकवान, मिष्टान्न आदि बनाने को नहीं कहा। दूध, सब्जी भी मुश्किल से देखने को मिलता ।

मगर राधा को अपने मायके में हर रोज स्वादिष्ठ भोजन और पकवान मिला करते थे। उसे अच्छे खाने की आदत पड़ चुकी थी। लेकिन पति के डर से कभी कुछ विशेष व्यंजन या मिष्टान्न नहीं बना पाती थी।

स्वादिष्ठ पदार्थ खाये बिना उसके लिए अब और अधिक दिन काटना मुश्किल हो गया। उसने सोचा कि पति तो दिन में रहते नहीं, क्यों न अपने लिए मनपसन्द खाना बना लिया करूँ। पैसों की कमी भी नहीं । शिवकरन को विश्वास था कि राधा भी उसी की तरह किफायती है। इसलिए वह सारे पैसे उसी को रखने के लिए दे देता था।

अब वह हर रोज दिन में तरह-तरह के पकवान और मिष्टान्न बना कर खाने लगी। कभी पकौड़ी, भाजी तो कभी लड्डू, जलेबी आदि । उसने यह सब नाराज होने के डर से पति को कभी नहीं बताया।

एक दिन शिवकरन जब रात को घर लौट रहा था तो उसके पड़ोसी ने कहा, - ''आज मेरे घर भगवान की पूजा थी, चलकर प्रसाद खा लो। लेकिन हमारे घर की मिठाई उतनी स्वादिष्ठ नहीं होगी, जितनी राधा भाभी बनाती हैं ।'' यह कह कर उसने उसके हाथ पर दो-चार जलेबियाँ रख दीं।

पच्चीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

"मेरी पत्नी तो सादा भोजन के अलावा और कुछ बनाना जानती ही नहीं।" शिवकरन ने कहा।

"भाई साहब, क्या कह रहे हो? वह तो सारे पकवान और मिष्टान्न बनाना जानती हैं। वह तो पकवानों की खुशबू से ही पता चल जाता है। मेरी पत्नी के पकवानों से उतनी अच्छी खुशबू कभी नहीं आती। मैंने तो उसे कई बार कहा कि उनसे जाकर कुछ अच्छे मिष्टान्न बनाना सीख ले ।" पड़ोसी ने कहा।

शिवकरन को आश्चर्य तो हुआ लेकिन उसने पड़ोसी से कुछ कहा नहीं। वह चुपचाप घर आ गया। उसने राधा से भी कुछ नहीं पूछा। वह अपनी आँखों से ही देखकर सचाई जानना चाहता था। इसलिए दूसरे दिन सबेरे शहर जाने के बहाने वह घर से निकल तो पड़ा, लेकिन पिछवाड़े से आकर घर के एक कोने में छिप गया।

उस दिन राधा ने पूरी और खीर बनाई । मूंग की दाल के लड्डू बनाये। गली से गन्ना लाकर उसके टुकड़े कर उन्हें चूसा। फिर सब खा-पीकर बर्तन साफ किये और उन्हें इस प्रकार रख दिये, मानों कुछ बनाया ही नहीं।

शिवकरन यह सब देखता रहा। फिर मौका पाकर चुपके से बाहर निकल गया। बाहर जाकर उसने अपने पाँव में पट्टी की तरह कपड़ा लपेट लिया और लंगड़ाते हुए घर पर आया।

राधा ने घबरा कर पूछा, - "आप के पाँव में क्या हो गया?"

"साँप ने काट लिया और क्या होगा?" व्यंग्यपूर्वक दुखी मन से शिवकरन बोला।

"क्या वह बहुत बड़ा साँप था?" राधा डरती हुई बोली।

"हाँ उतना ही बड़ा, जितना बड़ा तुम्हारा गन्ना था। तुम्हारे लड्डू की तरह मेरा पाँव सूज गया है। तुम्हारी खीर की तरह मुँह से झाग निकला है।" शिवकरन ने कहा।

राधा यह सोच कर बहुत डर गई कि पति को उसका सारा भेद मालूम हो गया है। उसका चेहरा पीला पड़ गया और घबराहट से उसे पसीना आने लगा।

तब शिवकरन ने अपने चेहरे का भाव बदल कर मुस्कुराते हुए कहा, - "घबराओ नहीं। गलती मेरी है। साधन रहते हुए भी रूखा-सूखा खाकर शरीर को सूखाने और मन मारने का कोई फायदा नहीं है। आखिर आदमी कमाता किसलिए है। आज से मेरे लिए भी बढ़िया-बढ़िया पकवान और मिष्टान्न बनाया करो।"
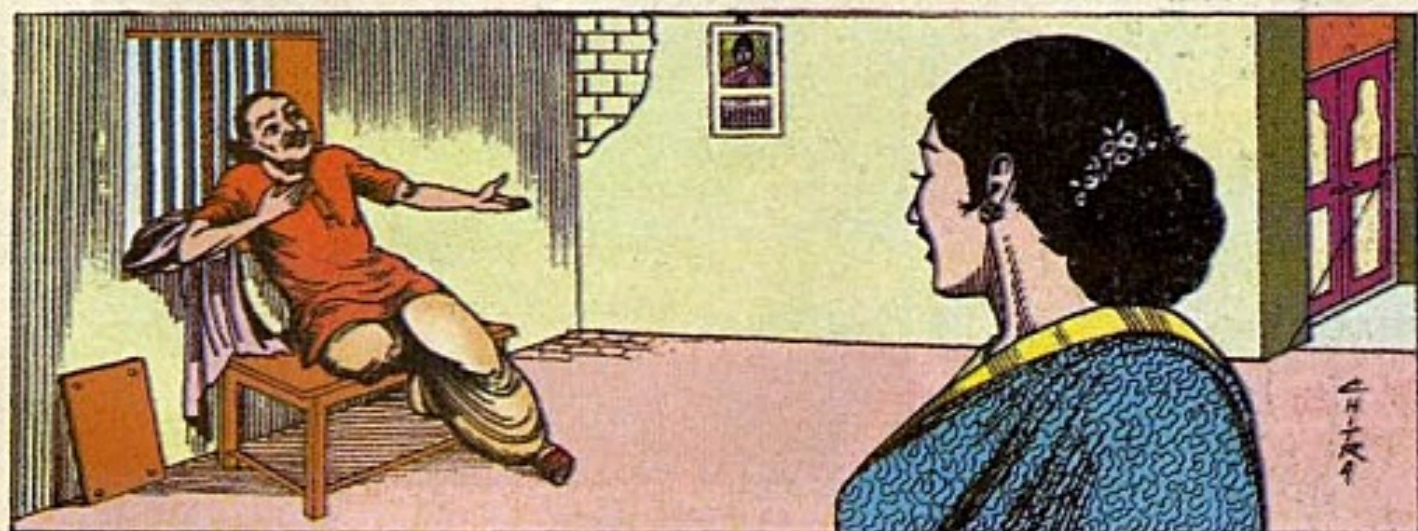
परोपकारी समीर
चन्दामामा
पेश करते हैं
चित्र : पाणि
रामपुर के लोग चोरों और
भूतों के भय से काँप रहे थे ।
लोगों का मानना था कि पुराने
राजभवन के खंडहर में भूत-प्रेतों का
अड्डा है । उनको चोर-लुटेरों को
भी डर था जो कि आस-पास के
निर्जन स्थानों में छिपे
रहते और मौका देख कर
गाँव वालों को लूट लेते
थे। ऐसे समय पर समीर
नाम का एक युवक अपने
कुत्ते, शेरू, के साथ उस
गाँव में आया और
भूतों के अड्डे में
रहने लगा।
वह युवक गाँव के
अधिकारी से मिलकर कहा
कि अब लोगों को भूतों से डरने
की जरूरत नहीं है, क्योंकि भूतों से
बचाने का दायित्व उसने अपने ऊपर
ले लिया है। ग्रामवासियों को इसकी
जानकारी दे दें ।
सुनो, भाई, सुनो ! अंधेरा
होने के बाद कृपया
कोई बाहर न आयें।
युवक समीर रात को
पहरा देगा और चोरों
को पकड़ लेगा।
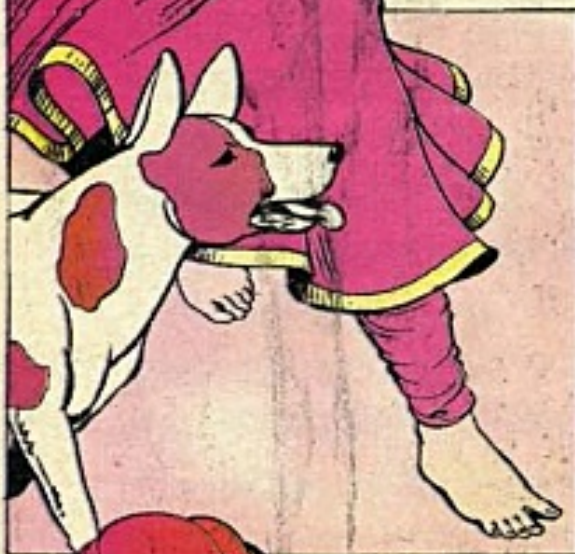
समीर रात भर गाँव में पहरा देने लगा। जो भी आदमी बाहर दिखाई पड़ता उसे पकड़ कर भूतोंके अड्डे में बंद कर देता और सवेरे छोड़ देता।
थोड़े दिनों में ही भूतों का भय कम हो गया। परन्तु कुछ गाँववालों ने ग्रामाधिकारी से शिकायत की।
"क्या तुम हर व्यक्ति पर सन्देह करके उसे भूतों के अड्डे में कैद करते हो?"
"हाँ, वे रात भर भूतों के अड्डे में रहेंगे तो वे जान जायेंगे कि भूत-प्रेत नहीं होते। इससे चोरों का भय भी दूर होगा।"
कुछ दिनों के बाद सचमुच लोगों के मन से चोरों का डर निकल गया। ग्रामाधिकारी ने समीर की प्रशंसा की और सबके सामने उसका सम्मान किया।
तुमने छोटे-मोटे चोरों के डर से तो गाँव को मुक्त कर दिया। लेकिन क्या बड़े-बड़े चोरों के डर से भी हमें मुक्त कर सकते हो?
बलराम एक ऐसे ही बड़े चोर का शिकार बन गया है।
उसका पिता मरते-मरते यह कह गया था कि साहुकार किशोर का चार हजार रुपयों का ऋण मैंने चुका दिया है, लेकिन उसने ऋणपत्र नहीं लौटाया। जैसे भी हो, ऋणपत्र उससे अवश्य वापस ले लेना।

पिता के कहने पर बलराम ने साहुकार से ऋणपत्र मांगा। लेकिन उसने इनकार कर दिया और उसके घर पर भी कब्जा कर लिया।

यदि बात सच निकली तो उसकी भी खबर लूँगा।

रात में पहरा देते समय समीर ने साहुकार के घर की दीवार में छेद कर दिया।

दूसरे दिन समीर ग्रामाधिकारी के पास गया और साहुकार को भी वहाँ बुलवाया।

बाप रे! भूल कर भी मैं उससे नहीं मिलूँगा । फिर तो गोपी के भूत ने ही मेरी दीवार में सेंध लगाई होगी।
जाइये, साहुकार जी, भूतों से बात करने का मौका हाथ से न जाने दीजिये ।

उसका नाम सुनते ही डर से मेरा शरीर काँप रहा है ।

लेकिन डरने की क्या बात है? क्या वह आप से नाराज है?

हाँ । उसने मुझसे कर्ज लिया था और चुका भी दिया । लेकिन मैंने उसका ऋणपत्र नहीं लौटाया । बल्कि बेइमानी से उसके घर पर भी कब्जा कर लिया । लगता है कि वह हमसे बदला लेना चाहता है ।
तो आप ऐसा कीजिये, उसे अपना घर लौटाकर, एक हजार रुपये भी दे दीजिये । मैं उस प्रेत को संभाल लूँगा ।

साहुकार ने अधिकारी को ऋणपत्र लौटा दिया। उसने गोपी के बच्चों को उनका घर वापस करके, एक हजार रुपये भी दिया ।

अगले दिन समीर अपने कुत्ते के साथ दूसरे गाँव की ओर चल पड़ा ।

चन्दामामा
'भारत की खोज' प्रश्नोत्तरी

इस अंक में दी गई प्रश्नोत्तरी के उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। तब तक इनके उत्तर आप स्वयं खोजने की कोशिश करें और भारत के पुरा काल व परम्परा के ज्ञान से अपने को समृद्ध करें।

1.(अ) कौन-से दो महान पैगम्बर समसामयिक थे और दोनों राजवंश के थे?

(ब) बौद्ध धर्म की प्रारंभिक पुस्तकें किस भाषा में लिखी गईं?

(स) बौद्ध धर्म के सबसे पहले ग्रंथ का नाम क्या है?

(द) किस भाषा में जैन धर्म की प्रारंभिक पुस्तकें लिखी गईं?

(इ) जैन धर्म के सबसे पहले लिखे गये ग्रंथों के नाम क्या हैं?

2

पौराणिक काल का एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया। जंगल में शिकार किये गये पशु के रक्त से उसका उपरि वस्त्र लथपथ हो गया। उसने उस वस्त्र को अपनी रानी के पास भेज दिया। उसने वस्त्र-वाहक को निर्देश दिया कि वह रानी को कुछ न बताये, केवल उसका रक्तरंजित वस्त्र उसके सामने रख दे। वह रानी की प्रतिक्रिया देखना चाहता था, क्योंकि उसे विश्वास था कि वस्त्र को देख कर रानी उसे मृत समझ लेगी।

मजाक बड़ा महँगा पड़ा, क्योंकि राजा जब तक महल में वापस पहुँचा, रानी शोक में मर चुकी थी।

राजा का नाम क्या था? रानी का नाम क्या था?

सृजनात्मक स्पर्धाएँ

अप्रैल माह की चुनी गयी कहावत - हाथों के जल जाने के बाद पत्तों को पकड़ने से क्या फ़ायदा? पर आधारित कहानी

चोर को पनाह

शिल्पंगेरि नामक गाँव में सोना नामक एक बनिया व्यापारी रहा करता था। एक दिन आधी रात को जब वह सो रहा था तब किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। उठकर उसने दरवाज़ा खोला।

वहाँ एक आदमी खड़ा था, जिसके हाथ में एक थैली थी। दरवाजा के खुलते ही वह अंदर आया और दरवाजा बंद कर लिया, फिर सोना के पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाने लगा, ''महाशय, मुझे बचाइये। बड़ी विपत्ति में फंसा हुआ हूँ। ज़मींदार के आदमी मेरा पीछा कर रहे हैं। उन्होंने भाँप लिया कि मैं चोरी करके भागा आ रहा हूँ। अगर मैं पकड़ा गया तो मुझे आजीवन दंड मिलेगा। आप मुझे बचा लेंगे तो इस थैली में जितने भी गहने हैं, आपके सुपुर्द कर दूँगा।''

सोना पल भर सोचता रहा। फिर 'हाँ' कहते हुए चुप रह गया। ज़मींदार के आदमियों ने आकर चोर के बारे में तहकिक़ात की। सोना ने उनसे यह कहकर भेज दिया कि यहाँ कोई नहीं आया।

अब चोर निश्चिंत हो गया और उसने तुरंत चाकू निकालकर सोना से कहा, ''घर में जितने भी गहने और धन है, निकालो और मुझे दे दो।''

सोना स्तंभित होकर चोर को देखता ही रह गया। फिर उसने अपने को संभालते हुए कहा, ''मैंने तेरा उपकार किया, उल्टे तुम मेरा अपकार करने पर तुल गये?''

''यह जानते हुए भी तुमने मुझे पनाह दी कि मैं एक चोर हूँ। न्याय-अन्याय के बारे में बोलने का तुम्हें क्या हक़ है? चुपचाप गहने व धन निकाल, नहीं तो तेरी जान की ख़ैर नहीं।''

सोना ने भय से थरथराते हुए गहने और धन उसके सुपुर्द कर दिया। चोर ने सोना को एक खंभे से बांध दिया और गुर्राता हुआ बोला, ''मेरे यहाँ से जाने के पहले चिल्ला-चिल्लाकर किसी को बुलाने की तुमने कोशिश की तो तुम्हें मौत के घाट उतार दूँगा'' उसे यों सावधान करते हुए वह वहाँ से भाग निकाला।

सवेरा हो गया। ज़मींदार ने मुनादी पिटवायी कि जो लोग चोर का विवरण देंगे, उन्हें सोने की हज़ार अशर्फ़ियाँ दी जाएँगी। यह सुनकर सोना हक्का-बक्का रह गया।

वह सोचने लगा कि अगर मैं एक जिम्मेदार नागरिक की तरह बरताव करता तो अपने गहने व धन न खोता। साथ ही ज़मींदार की भेंट भी मिल जाती। दुराशा ने मुझे बरबाद कर दिया। मेरे हाथ जल गये। अब पत्तों को पकड़ने से क्या फ़ायदा?'' यों वह अपने ही आप दुखी होने लगा।

- कोलार कृष्ण अय्यर

भारत
तब और अब
पुरी
जगन्नाथ का नगर ओडिसा में

पुरी ओडिसा में भारत के पूर्वी समुद्री तट पर बसा हुआ एक अति प्राचीन नगर है। यहाँ के प्राचीन मन्दिर के इष्ट देव हैं - जगन्नाथ, उनके अग्रज बलराम तथा छोटी बहन सुभद्रा । वर्तमान मन्दिर राजा चोडागंग देव द्वारा बारहवीं शताब्दी में बनाया गया था, इसके पूर्व ये देवता एक पुराने मन्दिर में अथवा सम्भवतः कई पुराने मन्दिरों में रहते थे।

विश्वास किया जाता है कि जगन्नाथ स्वामी की काष्ठ प्रतिमा में कुछ रहस्यमय पदार्थ है जो नई प्रतिमा में समय-समय पर स्थानान्तरित किया जाता है। कुछ लोगों का विश्वास है कि वह पदार्थ कुछ और नहीं वरन श्रीकृष्ण के अवशेष हैं । अवशेषों की मंजूषा एक आदिवासी सरदार विश्ववसु द्वारा पूजी जाती थी। संभवतः विश्ववसु जरा सबरा का, जिसने भूल से श्रीकृष्ण पर बाण चला दिया था, वंशज था। एक पौराणिक राजा इन्द्रद्युम्न को ऐसा लगा कि भगवान की उपस्थिति पुरी के आसपास के जंगलों में कहीं छिपी पड़ी है। उसने चारों दिशाओं में चार बुद्धिमान व्यक्तियों को इसकी खोज करने के लिए भेजा।

उनमें से एक, विद्यापति पूर्व दिशा में गया और विश्ववसु का अतिथि बन गया। विश्ववसु की बेटी ललिता और विद्यापति दोनों एक दूसरे को चाहने लगे और तदनन्तर परिणय-बंधन में बंध गये। कुछ दिनों में विद्यापति को यह मालूम हुआ कि उसके ससुर किसी गुफा में जाकर किसी रहस्यमय पदार्थ की पूजा करते हैं। उसने उसे देखने की इच्छा व्यक्त की। लेकिन उसे उसकी आँखों पर पट्टी बाँध कर गुफा में ले जाया गया। विद्यापति ने तथापि चतुराई से काम लिया। उसने मार्ग में सरसों के दाने बिखेर दिये।

गुफा में जैसे ही वह पहुँचा उसे अन्तर्बोध हो गया कि वह भागवत अवशेष की उपस्थिति में है। कुछ दिनों के पश्चात जब सरसों के दाने उग आये, वह उनका अनुसरण करते हुए गुफा में पहुँचा और भगवान के अवशेषों की मंजूषा लेकर भाग गया। राजा इन्द्रद्युम्न बहुत प्रसन्न हुए। वे स्वयं जंगल में जाकर विश्ववसु से मिले और उसे इस बात पर राजी किया कि अब दिव्य अवशेषों को सबके लिए उपलब्ध कराने का समय आ गया है।

यह बड़ी दिलचस्प बात है कि विद्यापति और ललिता के वंशज जगन्नाथ स्वामी के पुजारियों में हैं। विद्यापति ब्राह्मण था। इससे यह पता चलता है कि उन दिनों जाति सम्बन्धी बर्जनाएँ नहीं थीं।

स्वामी जगन्नाथ की रथ यात्रा इसी महीने पड़ती है। यह घटना कृष्ण की गोपा से मथुरा तक की यात्रा का स्मरणोत्सव है। दसियों हजार लोग इस अवसर पर पुरी में एकत्र होते हैं।

पुरी में हरेक को अनुभव होता है कि सुदूर अतीत और बर्तमान की खाई संकीर्ण हो गई है। मन्दिर में दिया जानेवाला प्रसाद ऐसा भोजन है जिसे अधिक नहीं तो कम से कम एक हजार वर्ष पूर्व लोग खाते थे।

पुरी में अन्य अनेक पुरातन मन्दिर हैं। लेकिन इस शहर में आधुनिक सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। यहाँ के समुद्र-तट का बिहार-स्थल एक रम्य दृश्य है। प्रतिदिन हजारों तीर्थ यात्री तथा पर्यटक समुद्र में स्नान करते हैं या रूपहले रेत पर सैर का आनन्द लेते हैं।

आधुनिक पुरी में संस्कृत अध्ययन के लिए एक बृहत् संस्था है। एक और संस्था आयुर्वेद अध्ययन के लिए है।

लंका में

विश्व वातायन

लंका के प्राचीन इतिहास 'महावंश' के अनुसार सुदूर अतीत में पूर्वी भारत का एक राजकुमार विजय सिंह अपने पाँच सौ लेफ्टिनेंटों के साथ उस टापू पर पहुँचा । उसने वहाँ रहनेवाले थोड़े से आदिवासियों को जंगलों में भगा कर टापू पर अधिकार कर लिया। उसने अपने लेफ्टिनेंटों का विवाह मदुराई की कन्याओं से किया । वर्तमान सिंहली लोग उन्हीं के वंशज हैं। विजय सिंह के नाम पर टापू को लोग सिंहल कहने लगे। सम्राट अशोक के पुत्र-पुत्री राजकुमार महेन्द्र और राजकुमारी संघमित्रा ने वहाँ के राज परिवार और प्रजा को बौद्ध धर्म का अनुयायी बना दिया।

तत्पश्चात दक्षिण भारत के विशेषकर तमिल राज्यों के राजकुमार और व्यापारी, वहाँ जाकर बसने लगे। वे प्राय: भारत के निकटवर्ती क्षेत्र जाफना में केन्द्रित थे।

सिंहली लोग और श्रीलंका के तमिल लोग दोनों भारतीय मूल के हैं। फिर भी, अल्पसंख्यक तमिल बहुत दिनों तक सिंहली बहुसंख्यकों द्वारा उन पर किये जानेवाले अन्याय की शिकायत करते रहे। उन्होंने तमिल यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट (संक्षेप में टल्फ) नाम की संस्था के माध्यम से उसका विरोध किया । धीरे-धीरे अन्य कई तमिल संस्थाएँ संघटित हो गईं । उनमें सबसे अधिक हिंसावादी संस्था है - लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल एलम, जिसे संक्षेप में लिट्टे कहते हैं । यह श्रीलंका में अपने लिए एक स्वतंत्र राज्य की मांग कर रहा है।

लिट्टे के आविर्भाव से तमिल आन्दोलन की दिशा बदल गई। लिट्टे ने दावा किया कि यह

अशान्ति

तमिल लोगों का एक मात्र प्रतिनिधि है। इनसे थोड़ा भी भिन्न विचार रखनेवाले को मार दिया जाता था। लिट्टे ने कुछ बहुत अनुभवी और

ईमानदार तमिल नेताओं को और अन्त में भारत के प्रधान मंत्री राजीव गाँधी को मार्ग से हटा दिया।

लिट्टे और श्रीलंका की सेना के बीच निरन्तर संघर्ष चल रहा है। जाफना की आम जनता ने बहुत कष्ट झेला है। राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था को बहुत धक्का लगा है। हजारों तमिल शरणार्थी बन कर भारत आ गये हैं। हाल में इस संघर्ष ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया है।

श्रीलंकावासी तमिल लोगों के प्रति भारत का दृष्टिकोण सदा सहानुभूतिपूर्ण रहा है। किन्तु यह देश को विभाजित नहीं देखना चाहता। अपने अनुभव के आधार पर भारत यह समझता है कि विभाजन से समस्या नहीं सुलझती । भारत के विभाजन से न भारत को लाभ पहुँचा न पाकिस्तान को। बल्कि दोनों देशों की समस्या वैसी ही बनी हुई है।

दूसरी बात यह है कि लोकतंत्र में आस्था रखनेवाला कोई देश लिट्टे के तरीकों का अनुमोदन नहीं कर सकता । कुछ अति सम्मानित तमिल व्यक्तियों एवं अन्य नेताओं की हत्या को सभ्य आचरण नहीं कहा जा सकता। आतंकवाद की सभी निन्दा करते हैं।

संधि-वार्ता और समझौते के द्वारा बहुत कुछ उपलब्ध किया जा सकता है। भारत तथा अन्य देशों को भी आशा है कि हिंसा पर विजय प्राप्त करने के लिए पारस्परिक सद्भावना का वातावरण बनेगा।

चित्र
कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो? तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय
प्रतियोगिता
चन्दामामा
वडपलनि
चेन्नै - 600 026

जो हमारे पास इस माह की 25 तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर 100/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

ब धा इ यां

मई अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

कुमारी अवनि श्रीवास्तव
द्वारा, श्री सन्तोष श्रीवास्तव
एप - 1/41 (1100) अरेरा कालोनी,
भोपाल - 462 016 (म. प्र.)

विजयी प्रविष्टि :
"डरो नहीं बकरी : मैं बाघ नकली"

CHANDAMAMA (Hindi) JULY 2000 Registrar of Newspapers, India RN1087/57